चन्दामामा
अक्तूबर १९९७
Rs. 6

CHANDAMAMA

स्वतन्त्रता के 50 वर्ष के शुभ अवसर पर

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स

डायमण्ड कॉमिक्स

पेश करते हैं

प्राण
पिंकी और अंकल जी

प्राण
रमन की टोपी

गैंगवार
डायनामाइट सीरीज

ताई जी और मूर्ख नौकर

प्राण
चाचा चौधरी और तिरंगा
1100 वां अंक

प्राण
चाचा चौधरी और इम्पोर्टिड कार

फौलादी सिंह और टाइम बम

राजन इकबाल और नरभक्षी बाजा

डायमण्ड कॉमिक्स डाइजेस्ट
फैण्टम-71

मैण्ड्रेक-58

जेम्स बाण्ड-61
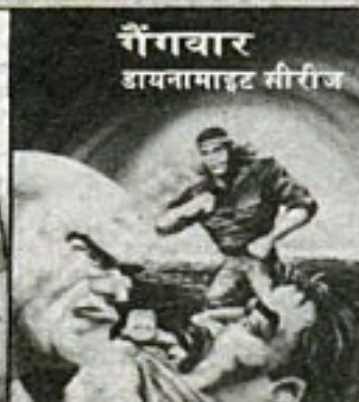
नई अमर चित्रकथायें

मूल्य प्रत्येक 15/-

- गुरु अर्जन देव • विश्वामित्र
- गोपाल और ग्वाला
- शची और इन्द्र • राजा भोज
- शिव पार्वती • रंजीत सिंह
- विक्रमादित्य का सिंहासन
- दुर्गादास • सावित्री

डायमण्ड कॉमिक्स प्रा.लि.
X-30, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-2
नई दिल्ली-110020

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और बचायें रु. 200/- वार्षिक

अंकुर बाल बुक क्लब घर बैठे डायमण्ड कॉमिक्स पाने का सबसे सरल तरीका है। आप गांव में हैं या ऐसी जगह जहाँ डायमण्ड कॉमिक्स नहीं पहुंच पाते। डाक द्वारा वी.पी.पी. से हर माह डायमण्ड कॉमिक्स के 6 नये कॉमिक्स पायें और मनोरंजन की दुनिया में खो जायें साथ ही ढेरों इनाम पायें।

हर माह छः कॉमिक्स (48/- रु. की) एक साथ मंगवाने पर **4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 7/-)** लगातार 12 वी.पी. छुड़ाने पर 13वीं वी.पी. फ्री।

1 वर्ष में महीने	बचत (रु.)	कुल बचत (रु.)
12	4/- (छूट)	48.00
12	7/- (डाक व्यय)	84.00
1	48/- (13वीं वी.पी. फ्री)	48.00
सदस्यता प्रमाण पत्र व अन्य आकर्षक 'उपहार', स्टिकर और 'डायमण्ड पुस्तक समाचार' फ्री		20.00
		200.00

सदस्य बनने के लिए आप केवल संलग्न कूपन को भरकर भेजें और सदस्यता शुल्क के 10 रु. डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में अवश्य भेजें। इस योजना के अन्तर्गत हर माह 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी जिसमें छः कॉमिक्स होंगी।

हाँ, मैं "अंकर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ______________________

पता ______________________

____

डाक __________ जिला __________ पिनकोड __________

सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट/मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।

मेरा जन्म दिन ______________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

महिलाओं की अपनी पत्रिका गृहलक्ष्मी

चन्दामामा

अक्तूबर १९९७

एक प्रति : ६.००

वार्षिक चंदा : ७२.००

मां,
ये एल.आई.सी. क्या है?

सुरक्षा का
आरामदेह कंबल!

एल.आई.सी. यानी भारतीय जीवन बीमा निगम. इनके पास हैं
बच्चों के सुनहरे भविष्य के लिए नई-नई फ़ायदेमंद योजनाएं.
अपने मम्मी-डैडी से पूछो ना - जीवन सुकन्या, जीवन किशोर,
जीवन बाल्य और चिल्ड्रेंस मनी बैक पॉलिसियों के बारे में!
एल.आई.सी. रखे आपका ख़याल, हरदम.

भारतीय जीवन बीमा निगम

बीमा कराइए. सुरक्षा पाइए.

R.K SWAMY/BBDO LIC 6181 D HIN

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी' संचालक : बी. नागिरेड्डी

सुवर्ण संयोग

'चन्दामामा' के पिछले अंक में प्रकाशित भारत में घटी एक असाधारण व अद्भुत घटना का चित्रमय रूप लेख आपने पढ़ा ही होगा। वह ब्रिटिश के विरुद्ध हज़ारों देश-प्रेमियों व त्याग-धनियों से छेड़ा गया स्वतंत्रता के संग्राम से संबंधित था। भारतीय अपने देश को विदेशियों से मुक्त करना चाहते थे, क्योंकि उनका देश उनके लिए माता है। हमारे देश के महान देशप्रेमी भारत को पवित्र देवी समान मानते थे।

इस विचार का आधार था, श्री अरबिंद का (१८७२-१९५०) लिखा एक व्यक्तिगत पत्र, जिसमें उन्होंने लिखा ''भारत माता भूमि का कोई टुकड़ा नहीं है। वह शक्ति है, देवी है।''

शायद आप में से बहुत-से लोग जानते ही होंगे कि वे भारत माता के प्रथम पुत्र थे, जिन्होंने भारत की संपूर्ण स्वतंत्रता की मांग की। हमें स्वतंत्रता मिली, उन्हीं के जन्म-दिनोत्सव के अवसर पर - पंद्रह, अगस्त।

भारत ही नहीं बल्कि पूरा संसार उनका १२५वाँ जन्म-दिनोत्सव मना रहा है। यह संयोग की बात है कि यह हमारी स्वतंत्रता-प्राप्ति का पचासवाँ वर्ष भी है।

श्री अरविंद महान द्रष्टा थे। उनका विश्वास था कि हम सब मनुष्य मिल-जुलकर रहें; हमारी आकांक्षाएँ एक हों; हमारे लक्ष्य पवित्र हों तो हम अपना सर्वतोमुखी विकास कर सकते हैं। हम उनकी आशाओं को फलीभूत करने की चेष्टा करें और कृतज्ञता-भरे भावों से उनका स्मरण करते रहें।

वर्ष : ४७ अक्तूबर १९९७ अंक : १२

एक प्रति : रु. ६/- वार्षिक चन्दा : रु.७२/-

PolioPlus

IMMUNIZATION AN ASSURANCE OF GOOD HEALTH TO CHILDREN

VACCINATIONS When and How Many

Age to Start Vaccination	Name of Vaccine	Name of Disease	How Many Times
Birth	BCG	Tuberculosis	Once
6 weeks	Polio	Polio	Three times with intervals of at least one month
6 weeks	DPT	Diphtheria Pertussis (Whooping Cough) Tetanus	Three times with intervals of at least one month
9 months	Measles	Measles	Once

Babies should receive all vaccinations by the time they are twelve months old.

Pregnant women should get themselves vaccinated against Tetanus (TT) twice—in an interval of at least one month—during the later stages of pregnancy.

HEALTHY CHILD—NATION'S HOPE & PRIDE

Design courtesy : World Health Organisation

समाचार - विशेषताएँ

हांकांग

पचास सालों के पहले ब्रिटेन ने भारत छोड़ा और चला गया। ब्रिटेन के साथ ९९ सालों का पट्टा समाप्त हुआ, जिसके कारण दो महीनों के पहले हांकांग पुनः चीन से जा मिला। हांकांग में लगभग एक सौ पचास सालों तक ब्रिटेन का प्रवास-शासन चलता रहा, जो जून, ३० को ख़तम हो गया।

चीन के दक्षिणाग्र में प्रधान भूभागों से सटकर क़रीबन २०० द्वीप हैं। हांकांग उनमें से एक द्वीप है। ब्रिटेन के साथ अफ़ीम का जो युद्ध हुआ, उसमें चीन हार गया। दूसरे ही साल ब्रिटेन ने हांकांग को अपने वश में कर लिया। बीस सालों के अंदर ही एक और युद्ध हुआ। १८६० में कोलून को ब्रिटेन ने अपने कब्जे में किया। १८९८ में चीन ने नूतन प्रदेशों को भी मिलाकर हांकांग को भी ब्रिटेन के नाम ९९ सालों तक पट्टे पर दिया।

१९२४ में दोनों देशों के बीच जो समझौता हुआ, उसके अनुसार ब्रिटेन ने स्वीकार कर लिया कि वे हांकांग और कोलून को चीन को सौंप देंगे। तभी निर्णय हुआ कि सौंपने की तारीख़ १९९७ जून, ३० होगी।

हांकांग पर लगभग सौ सालों तक ब्रिटेन का आधिपत्य रहा। इस दौरान हांकांग ने वाणिज्य क्षेत्र में अद्‌भुत प्रगति की। मुंबई और सिंगापूर की तरह हांकांग में भी सहज बंदरगाह की अभिवृद्धि हुई। द्वितीय विश्व-युद्ध-काल में अभिवृद्धि थोड़ी मंद पड़ गयी। इसके बाद तेज़ी से इसकी अभिवृद्धि हुई। अन्य देशों की प्रजा नौकरी करने या व्यापार करने यहाँ आयी और क्रमशः यहीं बस गयी।

कुछ लोगों का संदेह था कि हांकांग चीन का भाग हो जाने पर क्या वही स्वतंत्रता व संपन्नता क़ायम रख सकेगा ? १९८४ में उभय देशों के बीच जो समझौता हुआ, उसमें इस विषय को लेकर कुछ निर्णय लिये गये।

हांकांग की प्रजा को व्यक्तिगत स्वतंत्रता होगी। हांकांग प्रत्येक प्रदेश के रूप में पहचाना जायेगा। चीन के कानून यहाँ लागू नहीं होंगे। पचास सालों तक यही स्थिति बनी रहेगी। हांकांग की अपनी विधान-सभा होगी। अपनी मुद्रा व कर-प्रणालियाँ होंगी। विदेश व रक्षा संबंधी विषयों पर चीन को ही अधिकार होंगे।

अधिकार-सुपुर्दगी के कार्यक्रम में ब्रिटिश सरकार की ओर से प्रिन्स चार्लेस, चीन की तरफ़ से अध्यक्ष जियान जेनिन ने भाग लिया। गवर्नर क्रिस प्याटन ने, चीन के प्रधान अधिकारी टुंग चीह्वा को औपचारिक ढंग से अधिकार सौंपा।

जून, ३० को ब्रिटेन ने आतिशबाजियाँ जलायीं। दूसरे दिन चीन ने दस हज़ार कबूतरों को उड़ाया और अपना हर्ष व्यक्त किया।

कनकदास की कविता

कोसल राज्य में कनकदास नामक एक किसान था। वह आदमी अच्छा था। थोड़ा-बहुत जो खेत था, उसी में खेती करता था और संतुष्ट रहता था। उसकी आशाएँ सीमित थीं, इसलिए सुखपूर्वक जीवन बिता पा रहा था।

एक बार विष्णुशर्मा नामक कवि कनकदास के गाँव आया। उसकी कविताएँ सुनने के लिए ग्रामीण राम के मंदिर में एकत्रित हुए। विष्णु शर्मा ने अपनी कविताएँ सुनायीं। वे कविताएँ सरल शैली में थीं, भाव भी उत्तम थे, जो अनपढ़ों की समझ में भी आसानी से आये। सबों ने उसका अभिनंदन करते हुए तालियाँ बजायीं। कुछ लोगों ने हार पहनाये तो कुछ लोगों ने उसे धन दिया।

विष्णुशर्मा ने ग्रामीणों को अपनी कृतज्ञता जतायी। राजा का दिया हुआ हरा-पीला पदक और ज़मींदार का दिया हुआ सोने का कड़ा उन्हें दिखाया।

विष्णुशर्मा की कविताएँ सुनने के लिए आये लोगों में से कनकदास भी था। कवि के इस सम्मान से वह बहुत प्रभावित हुआ।

उस रात को कनकदास सो नहीं सका। वह सोचने लगा कि ग्रामीणों ने क्यों इतने बड़े पैमाने पर कवि का सम्मान किया?

बहुत देर तक सोचने के बाद कनकदास की समझ में आया कि कविता का कितना मूल्य है। उसी क्षण वह सोचने लग गया कि मैं भी कविता रचूँ, लोगों को सुनाऊँ और सबकी प्रशंसा पाऊँ। उसे लगा कि अगर मैं सबकी प्रशंसा का पात्र बन जाऊँगा तो मुझे भी राजा से हरा-पीला पदक, ज़मींदार से सोने का कड़ा तथा अन्यों से भी धन पा सकूँगा।

कनकदास कोई अधिक पढ़ा-लिखा नहीं

आशालता

था। फिर भी वह निराश नहीं हुआ; उसका उत्साह ठंडा नहीं हुआ। उसने क़लम हाथ में ली और दीप के सामने बैठकर कविता लिखने का संकल्प किया। किन्तु वह निर्णय नहीं कर पाया कि कविता का विषय क्या हो? खर्राटे लेती हुई सो रही पत्नी पर पड़ी कनकदास की दृष्टि।

दूसरे ही क्षण उसे कविता का विषय मालूम हो गया। उसने पत्नी के खर्राटे को लेकर कविता रची। जो लिखा, पढ़ लिया तो वह अचंभे में आ गया। अपनी कविता-शक्ति पर उसे खुद विश्वास नहीं हुआ। थोड़ी ही देर में कनकदास सो गया। उसने सपने में देखा कि ग्रामीण उसे पालकी में बिठाकर राजा के पास ले गये। कनकदास की कविता सुनकर राजा बहुत ही प्रसन्न हुए और उसके पैर में चाँदी का तोड़ा पहनाया।

उस दिन सबेरा होने के पहले ही कनकदास जाग गया। सपने का स्मरण करके वह खुशी के मारे पागल हो रहा था। वह अपनी कविता किसी को सुनाने के लिए आतुर हो रहा था। पड़ोसी विठ्ठल से उसकी अच्छी दोस्ती थी। उसके पास जाकर उसने उससे कहा "विठ्ठल, मैंने कविता लिखी। तुम्हें सुनाने आया हूँ।" उसने खर्राटेवाली कविता सुनायी।

कविता सुनकर विठ्ठल आग बबूला होता हुआ बोला "एक तो हम तेरी पत्नी के खर्राटे के कारण सो नहीं पा रहे हैं, तिसपर सबेरे-सबेरे अपनी कविता सुनाकर मुझे क्यों परेशान करते हो। तेरी इस कविता से तेरी पत्नी का

खर्राटा ही कहीं अच्छा है। फिर कभी भी कविता सुनाने का प्रयत्न मत करना।"

कनकदास का चेहरा फीका पड़ गया। उसने सोचा कि उसकी कविता को समझने का सामर्थ्य विठ्ठल में नहीं है। उस दिन शाम को वह गाँव के बीचों-बीच स्थित चबूतरे के पास गया। वहाँ उसने बूढ़े अध्यापक मंगल पांडे को देखा। कनकदास ने उसे अपनी कविता सुनायी। कविता सुनकर पांडे का दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। मन ही मन उसने कहा "यह और इसकी कविता भाड़ में जाए।" पर उसने अपना यह भाव प्रकट होने नहीं दिया। इसकी एक वजह थी। कनकदास का वह कर्ज़दार था।

मंगल पांडे ने मुस्कुराते हुए कहा "कनक दास, विष्णुशर्मा की कविता थोड़ी-बहुत
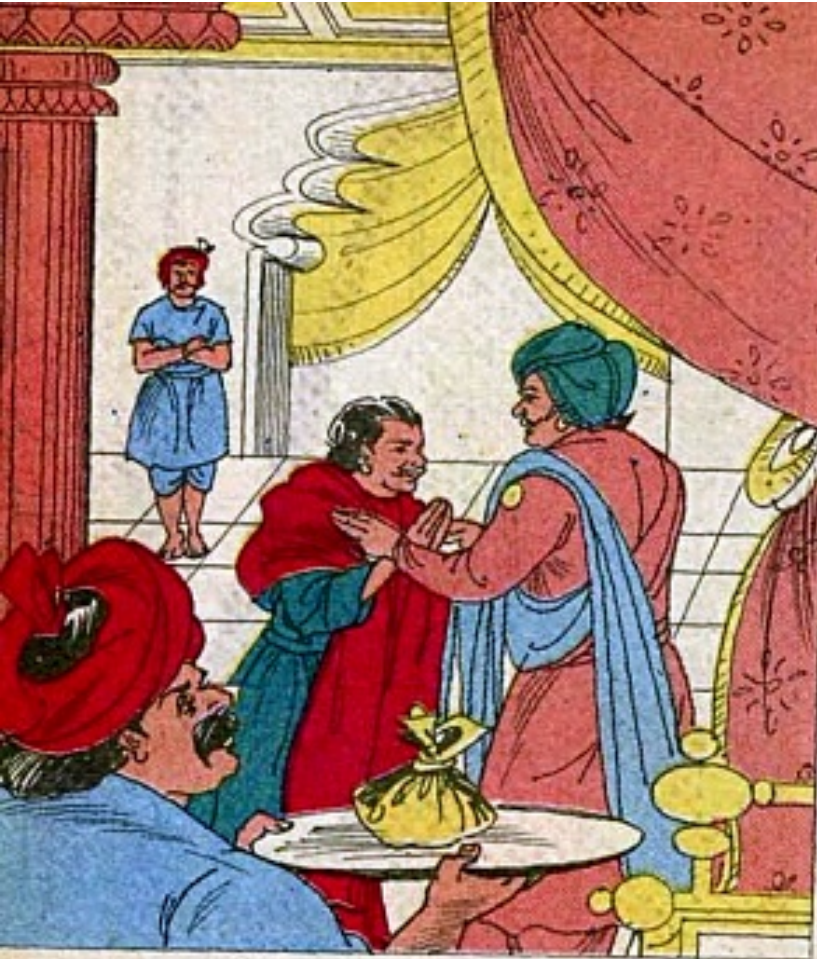
समझ में आयी, परंतु तुम्हारी कविता का एक शब्द भी समझ में नहीं आया। मतलब यह हुआ कि विष्णुशर्मा की पहुँच अनपढ़ों तक ही है। तुम्हारी पहुँच पंडितों तक है। तुरंत जाओ और ज़मींदार को अपनी कविता सुनाओ। विष्णुशर्मा को जैसे पहनाया, वैसे ही तुम्हें भी सोने का तोड़ा पहना देंगे।''

कनकदास ने मंगल पांडे की बातों का विश्वास किया। ज़मींदार के पास गया और कविता सुनायी। ज़मींदार अपने ही आप हँसा और उसे छेड़ने के उद्देश्य से कहा ''कनकदास, ऐसी कविता आज तक मैंने नहीं सुनी।'' एक शाल ओढ़ा और सौ अशर्फ़ियाँ दीं।

इससे कनकदास को अपनी कविता पर और विश्वास हो गया। एक हफ़्ते तक वह खेत की ओर गया भी नहीं। उसने भैंसों पर, गाँव के कुत्तों पर, खेतों पर कविताएँ लिखीं। उसका विश्वास था कि इन कविताओं को सुनकर राजा बहुत खुश होंगे और उसे इनाम देंगे। वह राजा का दर्शन करने राजधानी गया।

कोसल राजा चंद्रकांत कला-प्रिय था। कविता उसका प्रिय विषय था। दो सेवक महाराज के पास आये और कहा ''प्रभू, कनकदास नामक एक किसान अपनी कविताएँ आपको सुनाना चाहता है। वह आपका दर्शनाभिलाषी है।''

चंद्रकांत को इस बात पर खुशी हुई कि उसके शासन-काल में किसान भी कविताएँ रच रहे हैं। उसने भरी सभा में उसे बुलवाया और उसे अपनी कविता सुनाने की अनुमति दी। उत्साह-भरे स्वर में उसने कविता सुनायी। कविता सुनते ही महाराज के सिर में दर्द होने लगा। सभा में बहुतों ने अपने कान बंद कर लिये।

महाराज ने कनकदास को गुर्राते हुए देखकर कहा ''मूर्ख, मन को कलुषित करने वाली ऐसी कविता आज तक मैंने नहीं सुनी। क्षुद्र पदों के इस संकलन की क्या किसी ने प्रशंसा की?''

भयभीत कनकदास ने काँपते हुए स्वर में कहा ''महाप्रभू, मेरे गाँव के अध्यापक मंगल पांडे ने मेरी कविता की प्रशंसा की। उन्होंने कहा भी कि मैं पंडितों का पंडित हूँ। ज़मींदार ने भी कहा कि मैंने ऐसी कविता आज तक सुनी ही नहीं। उन्होंने स्वयं शाल ओढ़ा और सौ अशर्फ़ियाँ भी भेंट में दीं।''

तब महाराज ने घोषणा की "इसकी मति भ्रष्ट हो गयी होगी। पागल लगता है। आवश्यक परीक्षाएँ करवाइये। अगर इसका दिमाग़ ठिकाने पर होता तो ऐसी भद्दी कविता कभी न सुनाता। इसे फाँसी पर लटकाइये। तब तक इसे जेल में बंद रखिये।"

सैनिकों ने कनकदास को जेल में डाल दिया और उसके बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए उसके गाँव गये। ज़मींदार ने खेल-खेल में उसकी खिल्ली उड़ाने के उद्देश्य से शाल ओढ़ा और धन दिया। जब यह विषय उसे मालूम हुआ कि बेचारे कनकदास ने उसकी बात सच मान ली और अब उसकी जान का ख़तरा है, तो बहुत दुखी हुआ। उसने सैनिकों से कहा "आजकल उसपर कविता का भूत सवार है। इसी से उसकी मति भ्रष्ट हो गयी। आदमी तो बहुत अच्छा है।"

सैनिकों ने यह बात महाराज से बतायी। महाराज ने उसपर दया दिखायी और उसे रिहा करने का हुक़्म दिया। कनकदास ने जेल से बाहर आने के बाद क़सम खायी कि आगे से भूलकर भी कविता नहीं लिखूँगा।

गाँव पहुँचने के एक हफ़्ते के बाद एक अपरिचित व्यक्ति उसके पास आया। कहा "महा कविराज को सविनय प्रणाम" उसने नमस्कार किया।

यह सुनते ही कनकदास ने भय से काँपते हुए कहा "मैं कविराज हूँ? जेल से छूटने के बाद मैंने क़सम खायी कि भविष्य में भूलकर भी कविता नहीं करूँगा। बताना, तुम कौन हो?" अपरिचित व्यक्ति ने मुस्कुराकर कहा "मेरा नाम निशाचरण है। मैं भूतों का मांत्रिक हूँ। कोसल राज्य की सभा में मैंने आपकी कविता सुनी। उस कविता के द्वारा धन कमाने का अचूक एक उपाय मैंने सोचा।"

कनकदास ने कहा "धन कमाने की दुराशा में पड़कर एक बार जेल जा चुका। ऐसी भूल फिर दुहराऊँगा नहीं।"

निशाचरण ने कहा "इस बार ऐसा नहीं होगा। मेरा एतबार कीजिये।" कनकदास ने पूछा "ठीक है, कविता किसे सुनानी होगी?"

तब तक अंधेरा छा चुका था। निशाचरण ने कहा "मेरे साथ आइये।" वह कनकदास को श्मशान ले गया।

कनकदास ने श्मशान के चारों ओर देखा और कहा "लाशों को कविता सुनानी है

क्या?''

''बिल्कुल नहीं। आपको कविता सुनानी है पिशाचों को। सच कहा जाए तो कविता की महिमा मनुष्यों से अधिक पिशाच ही जानते हैं। ऊँचे स्वर में अपनी कविता का गान शुरू कीजिये'' निशाचरण ने कहा।

कनकदास ने आँखें बंद कर लीं और गाना शुरू किया। कुछ ही क्षणों में वहाँ दस-बारह पिशाच आ गये। वे ध्यान से सुनने लगे। बीच-बीच में कानाफूसी करने लगे। उसने खरटि पर, गाँव के कुत्तों पर जो-जो कविताएँ लिखीं, सुनायीं और आँखें खोलीं तो देखा कि उसके सामने पिशाच बैठे हुए हैं। भय से वह काँपने लगा तो पिशाचों ने ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजायीं।

कुछ पिशाचों ने पुष्पहारों की सृष्टि की और हवा में उड़ते हुए आकर उसके गले में डालीं। कुछ और पिशाचों ने धन की गठरियाँ, आभूषणों की राशियाँ उसके पैरों के सामने रखीं। इससे उसमें धैर्य बढ़ गया और फिर से कविता सुनाने लगा। पिशाचों ने कविता का मज़ा लूटा और आख़िर पेड़ों पर जाकर बैठ गये।

कनकदास धन और आभूषणों की गठरियों को जब कंधे पर डालने लगा तब निशाचरण ने कहा ''क्या यह आपका धर्म नहीं कि मेरा हिस्सा मुझे दिया जाए। आपको क्या नहीं लगता कि इनपर मेरा भी हक़ है?''

''हाँ, हाँ, अवश्य। ''कहते हुए कनकदास ने आधा हिस्सा निशाचरण को दे दिया। फिर पूछा ''तुमने कैसे अंदाज़ा लगाबा कि मेरी कविता पिशाचों को पसंद आयेगी?''

निशाचरण ने कहा ''पिशाचों की भाषा थोड़ी-बहुत जानता हूँ। जब राजसभा में मैंने आपकी कविता सुनी तो मुझे लगा कि पिशाचों की भाषा से उसका निकट संबंध है। इसीलिए मैं आपको यहाँ ले आया। भाग्यवश मेरा विचार सही निकला।''

जब कनकदास को मालूम हुआ कि उसकी कविता का पिशाचों की भाषा से निकट संबंध है तो उसने फिर कभी भी कविता रचने अथवा सुनाने की जुर्रत नहीं की। पर कविता के द्वारा धन कमाने की उसकी इच्छा पूरी हुई।

सास - नयी बहू

राजबाबू रुक्मिणी का बेटा था। उसका विवाह हुआ और बहू उर्मिला ससुराल आयी। वह पढ़ी-लिखी थी। रुक्मिणी को तो काला अक्षर भैंस के बराबर था। उसे अक्षर-ज्ञान भी नहीं था। ऊर्मिला को अपने सुशिक्षित होने का बड़ा गर्व था। सास रुक्मिणी की वह परवाह ही नहीं करती थी। उसकी दृष्टि में अनपढ़ आदर के लायक़ नहीं है। सास को अपने अशिक्षित होने का बड़ा दुख था। अपनी इस कमी के कारण वह बहू से ज्यादा बात भी नहीं करती थी। दोनों में बनती भी नहीं थी। राजबाबू को यह परिस्थिति काफ़ी चिंताजनक लगी।

एक दिन रुक्मिणी के नाम एक ख़त आया। उसके दूर के एक रिश्तेदार ने मरते-मरते एक लाख रुपयों की जायदाद उसके नाम कर दी। पर एक शर्त पर। जब रुक्मिणी पढ़-लिख पायेगी और ख़ुद वह दस्तावेज़ पढ़ लेगी, तभी यह जायदाद उसकी होगी। मरे हुए दूर के रिश्तेदार ने इस ख़त में तत्संबंधी विवरण दिये। लाख रुपयों की जायदाद ! रुक्मिणी पढ़ नहीं सकती। तब इस समस्या की गुथ्थी कैसे सुलझे ? राजबाबू ने ख़त पढ़कर माँ को सुनाया और कहा "माँ, हम ग़रीब नहीं हैं। दस एकड़ों का उपजाऊ खेत है। फिर भी अप्रत्याशित ही लक्ष्मी ने हमारा दरवाज़ा खटखटाया। घर आयी लक्ष्मी को ठुकराना अपचार है। मेरी बात मानो और पढ़-लिखना सीखो।"

"इस उम्र में पढ़ाई। लोग सुनेंगे तो हँसेंगे" रुक्मिणी ने कहा। "पढ़ाई का उम्र से कोई ताल्लुक नहीं। लोग हँसेंगे नहीं बल्कि तुम्हारी प्रशंसा करेंगे। जो जायदाद मिलने वाली है वह कोई सौ-हज़ार नहीं, पूरे लाख रुपयों की जायदाद है। ऊर्मिला तुम्हें पढ़ायेगी। मेरी बात मानो।" राजबाबू ने अपनी माँ

को समझाया।

रुक्मिणी ने 'हाँ' के भाव में सिर हिलाया। ऊर्मिला ने भी सास को पढ़ाने का पति का प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार किया। उसने सास को पढ़ाने का पति का प्रस्ताव इसलिए स्वीकार किया कि सास पढ़ी-लिखी हो जाए तो लाख रुपयों की जायदाद मिलेगी। यह प्रलोभन न होता तो शायद वह सास को पढ़ाने से इनकार कर देती।

राजबाबू पुस्तकें ले आया। घर के काम पूरे हो जाने के बाद ऊर्मिला अपनी सास से अक्षर लिखवाती थी। चार दिनों के बाद रुक्मिणी में पढ़ाई के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई। तीन महीनों के अंदर ही रुक्मिणी शब्द लिखने लगी। पाँच महीनों में उसने पुस्तक पढ़ना सीख लिया।

यों इन पाँच महीनों में सास और बहू के बीच मैत्री बढ़ी। घर के कामों में वह ऊर्मिला की सहायता करने लगी। बहू को अपनी अध्यापिका मानने लगी। सास का व्यवहार बहू को बहुत पसंद आया। पढ़ना सीख चुकने के बाद एक दिन रुक्मिणी ने अपने बेटे से दस्तावेज़ ले आने को कहा। राजबाबू ने मुस्कुराते हुए माँ और पत्नी को एक जगह पर बिठाया और कहा "तुम दोनों ध्यान से सुनो। परिस्थितियाँ अनुकूल हों तो किसी भी उम्र में पढ़ा-लिखा जा सकता है। पढ़ाई का उम्र से कोई संबंध नहीं। मैं चाहता था कि तुम दोनों के आपस के मतभेद दूर हो जाएँ। मैं समझता था कि तुम दोनों किसी कार्य में रत हो जाएँ तो समस्या का परिष्कार आप ही आप हो जायेगा। इसी को दृष्टि में रखकर मैंने इस ख़त की सृष्टि की। तुम दोनों अब जैसे हो, भविष्य में भी मिल-जुलकर रहो।"

रुक्मिणी ने आनंद-भरे स्वर में कहा "बेटे, तुमने कमाल का काम किया। इस उम्र में भारत, भागवत पढ़ती हुई समय गुज़ारूँगी। थोड़ा-बहुत पुण्य भी प्राप्त होगा।"

ऊर्मिला ने सास को आश्चर्य से देखते हुए पति से कहा "इस अनुभव से मुझमें विश्वास जगा है कि मैं और दूसरों को पढ़ा-लिखा सकती हूँ। अड़ोस-पड़ोस के बच्चों को इकट्ठा करके पाठशाला चलाऊँगी। यों दूसरों की सहायता करने का सदवकाश भी प्राप्त होगा।" उत्साह-भरे स्वर में उसने कहा।

सम्राट अशोक

१

(पिता की इच्छा के अनुसार अशोक उज्ञयिनी निकला। मार्ग-मध्य विदिशा की पाटियों में रुका। शाक्यनायक की पुत्री विदीशा से उसका परिचय हुआ। अशोक की हत्या करने भेजी गयी दोनों नर्तकियाँ विदीशा की जागरूकता के कारण पकड़ी गयीं। अशोक ने विदीशा से विवाह करना चाहा। बौद्ध भिक्षु उपगुप्त की अनुमति लेकर विदीशा ने अशोक से विवाह किया।) -बाद

कृष्णा नदी के तट पर स्थित उज्ञयिनी नगर बड़ा ही सुंदर नगर है। वहाँ की ज़मीन बड़ी ही उपजाऊ है। व्यपार खूब हो रहा है। प्रजा बहुत ही संतुष्ट है। जब से युवराज अशोक ने शासन की बागड़ोर संभाली तब से प्रजा ने किसी प्रकार की कमी महसूस नहीं की। बड़े ही अच्छे ढंग से वह शासन-भार संभाल रहा है।

अशोक की धर्मपत्नी विदीशा सबों के प्रेम का पात्र बनी। उसके सद्‌गुणों से मुग्ध जनता उसका आदर करने लगी। पाँच सालों में उनका एक पुत्र और एक पुत्री हुई। पुत्र का नाम है महेंद्र, पुत्री का नाम है - संघमित्रा। वे उन दोनों को बड़े प्यार से पालने-पोसने लगे।

उज्ञयिनी से संबंधित कार्यकलापों का विवरण देने के लिए यश बिंदुसार के पास भेजा गया। वह राजधानी पाटलीपुत्र गया

और बिंदुसार से मिला। यश को देखते ही राजा ने क्रोधित होकर कहा "अशोक ने कितनी बड़ी भूल कर दी। मैं सोच भी नहीं सकता कि वह ऐसी भूल करेगा। मुझे उससे बड़ी आशाएँ थीं। पर उसने मेरी आशाओं पर पानी फेर दिया। मेरी अनुमति लिये बिना ही उसने शादी करने का दुस्साहस किया। मालूम भी नहीं कि आख़िर वह कन्या है कौन? पिता का आदर करनेवाला कोई पुत्र क्या ऐसा काम करेगा?"

"महाराज मुझे क्षमा करें। विदीशा से विवाह रचाने के पहले उन्होंने आपकी स्वीकृति पाने के लिए एक दूत के द्वारा पत्र भेजा। उनका किया प्रथम कार्य वही था। आश्चर्य है कि वह पत्र आपको नहीं मिला। किन्तु आपका अनुमति-पत्र उन्हें मिल गया। मेरी समझ में नहीं आता कि यह कैसे संभव हुआ। अवश्य ही कोई गड़बड़ी है" यश ने विनयपूर्वक कहा।

राजा बिंदुसार ने मौन हो अपना सिर हिलाया। यश ने राजा को बताया कि विदीशा ने किस प्रकार दो बार अशोक की जान बचायी। फिर उसने उन दोनों के परिचय और प्रेम का विवरण देते हुए कहा कि अब विदीशा आदर्श धर्मपत्नी बनकर सुव्यवस्थित रूप से ग्राहस्थ्य जीवन बिता रही है। राजा ने सहनशील हो उसकी सारी बातें सुनीं। उसे लगा कि यश के कथन में सत्य है, अवश्य ही इसके पीछे कोई षड्यंत्र है। सेवक को बुलाया और आज्ञा दी कि यश के ठहरने का आवश्यक प्रबंध हो।

उसी दिन राजा ने प्रधान मंत्री खल्लाटक

को बुलवाया। "महामंत्री, मैं दस सालों से रोग-ग्रस्त हूँ। लगता है और अधिक दिन जीवित नहीं रहूँगा। मृत्यु से मुझे ड़र लग रहा है। क्या आप जानते हैं मेरी इस संकट पूर्ण स्थिति का क्या कारण है?" राजा ने पूछा और अपना दुख व्यक्त किया।

"अगर इतना भी जान नहीं पाऊँ तो इतनी लंबी अवधि तक मैं आपकी सेवा कैसे करता?" मंत्री ने कहा।

राजा ने चिंतित होते हुए धीमे स्वर में कहा "चंद्रगुप्त मौर्य से स्थापित सुविशाल मौर्य साम्राज्य के भविष्य के बारे में सोचने मात्र से मुझे ड़र लग रहा है। क्या यह ज़रूरी नहीं कि मरण-शय्या पर पड़े राजा के बग़ल में होनेवाला राजा भी उपस्थित हो? सुशेम को तुरंत बुलवाइये।"

"जो आज्ञा महाराज। आपकी आज्ञा का पालन होगा। मौर्य साम्राज्य के भविष्य के बारे में आपकी चिंता सही है। इस मौर्य साम्राज्य की गरिमा, प्रतिष्ठा व सुस्थिरता के लिए आपने जो त्याग कियेगा, जो परिश्रम किया, वह इतिहास कभी नहीं भूलेगा। भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि आप स्वस्थ हों और कुछ काल तक जीवित रहें।" मंत्री ने कहा।

"आप समझ चुके होंगे कि मैं क्यों सुशेम को वापस बुलाना चाहता हूँ, इसका क्या कारण है? इस विषय में आपका कोई मतभेद तो नहीं है न?" राजा ने पूछा।

मंत्री ने तुरंत इसका समाधान नहीं दिया। थोड़ी देर तक मौन रहा। फिर अपना मौन तोड़ते हुए उसने कहा "महाप्रभू, आप जानते हैं कि मेरा अभिप्राय क्या है। फिर भी उसे स्पष्ट बता देना मेरा कर्तव्य है। दुर्भाग्यवश सुशेम के तक्षशिला जाने से हमारी भलाई से अधिक हानि ही हुई है। युवराज को चाहिये था कि वे विद्रोहियों को कुचल डालें, मगर उन्होंने उन्हें बख्शीशें दीं, उन्हें पद दिये और अपने अधीन कर लिया। एक जिम्मेदार युवराज को ऐसा करना नहीं चाहिये। उन्हें विद्रोहियों को कुचल डालना था! उनका नामो-निशान मिटाना था। परंतु ऐसा न करके उन्होंने विद्रोहियों को प्रोत्साहन दिया। उनके इस व्यवहार से वे सामान्य जनता को और अधिक सताने लगे। जिन्होंने उनका विरोध किया, उन्हें क़ैदखानों में ठूँस रहे हैं; उन्हें मौत के घाट उतार रहे हैं। युवराज उन दुष्टों का साथ दे रहे हैं, उनका आदर कर रहे हैं। यों उन दुष्ट शत्रुओं का बल बढ़ा रहे हैं। मासूम जनता तरह-तरह के कष्टों का शिकार हो रही है। दूतों से ज्ञात हुआ कि किसी भी क्षण वहाँ की जनता विद्रोह करने पर तुल सकती है। दूसरी बात यह कि युवराज सदा विलास-क्रीडाओं में डूबे हुए रह रहे हैं। विनोद ही, सुख-भोग ही उनका दैनिक कार्यक्रम बन गया है। शासन-प्रणाली का सर्वनाश हो गया।" आवेश-भरे स्वर में मंत्री ने कहा। "मैंने भी ये समाचार सुने। पर मुझे लगा, बढ़ा-चढ़ाकर बातें कही जा रही हैं सुशेम के शत्रु उसपर कीचड़ उछाल रहे हैं। उसे बदनाम करने के उद्देश्य से ही ऐसी बातें कही जा रही हैं" राजा ने दीर्घ श्वास लेते हुए कहा।

"नहीं महाराज, ये समाचार बिलकुल सच हैं।" मंत्री ने कहा। "तो आपका अभिप्राय

है कि मगध सिंहासन पर आसीन होने की क्षमता सुशेम नहीं रखता।'' राजा ने पूछा।

''हाँ प्रभू, मेरा यही अभिप्राय है'' मंत्री ने दृढ़ स्वर में कहा। ''तो सिंहासन किसके सुपुर्द करूँ?'' राजा ने पूछा।

''युवराज अशोक में सिंहासन पर आसीन होने के लिए आवश्यक सारी योग्यताएँ हैं। विद्रोह को कुचल डालने में, विशाल साम्राज्य पर सुचारू रूप से शासन चलाने में वे अपना सामर्थ्य व दक्षता प्रमाणित कर चुके हैं। प्रजा भी उन्हें चाहती है।'' मंत्री ने कहा।

राजा ने थोड़ी देर तक सोचने के बाद कहा ''खल्लाटक, मैं इस विषय में कोई निर्णय ले नहीं पा रहा हूँ।''

''प्रभू, आप विश्राम कीजिये। आवश्यकता पड़ने पर सही निर्णय लिया जा सकता है।'' मंत्री ने राजा को नमस्कार किया और वहाँ से चला गया।

एक घंटे के अंदर ही फिर से राजभवन से मंत्री को बुलावा आया। अब इस बार राजा ने नहीं, राजा की पत्नी ने बुलवाया। मंत्री जब राजभवन पहुँचा, तब देखा कि राजा की शय्या के पास राज-वैद्य बैठे हुए हैं। राज पुरोहित व पहली पत्नी महारानी भी वहाँ मौजूद हैं।

मंत्री को देखते ही महारानी ने कहा ''राजा ने अचानक अपनी छाती पकड़ ली और बेहोश हो गये। उनकी इस स्थिति पर मैं बहुत व्याकुल हूँ। अच्छा यही होगा कि सुशेम को तुरंत बुला लें।''

''जो आज्ञा महारानी'' महामंत्री ने कहा।

''अभी दूत को भेज सकते हो?'' महारानी ने पूछा।

''एक घंटे के अंदर प्रबंध हो जाएगा महारानी'' मंत्री ने कहा।

''ठीक है। इस बीच मैं अपने पुत्र के नाम एक पत्र भी लिखूँगी। कहो कि दूत उस पत्र को भी ले जाए'' महारानी ने कहा और जल्दी-जल्दी अंदर चली गयी।

मंत्री ने वैद्य से बड़ी ही आतुरता-भरे स्वर में पूछा ''अब महाराज की कैसी हालत है?''

राजवैद्य ने कहा ''महाराज कल का सूर्योदय देख पाएँ तो यही बहुत बड़ी बात होगी। यही अद्भुत समझा जाना चाहिये।''

''किसी भी प्रकार राजा को जीवित रखने के प्रयत्न ज़ारी रखिये। मेरी सहायता की ज़रूरत हो तो बुलाइये'' कहकर मंत्री वहाँ

से चला गया।

राजपुरोहित भी मंत्री के साथ-साथ गया। द्वार पर खड़े सैनिक को बुलाकर मंत्री ने कहा "हम लोग रहस्य-कक्ष में होंगे। सेनाधिपति को तुरंत वहाँ आने को कहो" आज्ञा देकर मंत्री तेज़ी से आगे बढ़ा।

★ ★ ★

यश ने सुभद्रा के कक्ष में प्रवेश किया और उसे प्रणाम करके कहा "माँजी, युवराज अशोक ने मुझे भेजा है। उनसे भेजा गया दूत हूँ मैं। मेरा नाम यश है।"

"बहुत अच्छा। अपने पुत्र अशोक को देखे साल गुज़र गये। मेरा पुत्र कुशल है न?" सुभद्रा ने पूछा।

"युवराज सकुशल हैं माँजी। देवी जैसी विदीशादेवी से उन्होंने विवाह किया। एक पुत्री और एक पुत्र को भी उन्होंने जन्म दिया। उन बच्चों को आप देखेंगी तो आप फूले न समाएँगीं।" यश ने कहा।

"पुत्र, उज्जयिनी आने की मेरी भी इच्छा है। किन्तु महाराज का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। इस स्थिति में वहाँ आ नहीं सकती हूँ न।" कहकर सुभद्रा रुक गयी। परिचारिका इशारा करके उसे अंदर आने को कह रही थी। वह अंदर गयी और तुरंत वापस आकर यश से बोली "महाराज की स्थिति बड़ी ही गंभीर है। वैद्यों का कहना है कि शायद वे प्रात:काल भी देख न पायें।" गद्‌गद् स्वर में उसने कहा।

यश निकलने ही वाला था, सुभद्रा ने उससे कहा "पुत्र, जब तक राजा जीवित हैं तब तक मैं यहाँ रह सकूँगी। अगर कुछ ऐसा हो गया, जो होना नहीं चाहिये, तो यह भवन मेरे लिए नरक बन जायेगा। युवराज सुशेम के प्रति मेरे हृदय में मातृ-भाव है, परंतु वह मुझसे द्वेष कर रहा है। उसकी माँ महारानी मुझे अपना शत्रु मान रही है। पुत्र, मैं चाहती हूँ कि तुम यहाँ कुछ दिनों तक रह जाओ। अगर ऐसा कुछ हुआ, जो होना नहीं चाहिये तो मैं तुम्हारे साथ उज्जयिनी आऊँगी" आँसू-भरे नयनों से उसने कहा। "माँजी, आप चिंतित मत होइये। मैं समझ गया हूँ कि शेष रानियों का व्यवहार आपके साथ शिष्ट नहीं है। वे दिन दूर नहीं, जब कि शेष रानियाँ आपको राजमाता मानकर आपका गौरव करेंगीं।"

सुभद्रा कुछ बोल न सकी। दिग्भ्रांत होकर देखती रह गयी। "समय की प्रतीक्षा कीजिये माँजी। वह समय आसन्न हो गया जब कि

आपके पुत्र के लिए मैं अपनी सेवाएँ अर्पित करूँ। इस साम्राज्य के भविष्य का निर्णय चंद दिनों में हो जायेगा। आपकी इच्छा के अनुसार मैं यहीं रहूँगा। मैं बार-बार आपसे मिल नहीं सकूँगा। राजभवन में जो-जो हो रहा है, अपनी विश्वासपात्र परिचारिकाओं के द्वारा मुझे समाचार भेजते रहियेगा। मुझे जो करना है, मैं करता रहूँगा। मुझे आशीवाद दीजिये माँजी।'' यश ने झुककर सुभद्रा के पाँवों को प्रणाम किया और वहाँ से चला गया।

★ ★ ★

रहस्य-कक्ष में मंत्री से मिलने आये सेनाधिपति ने कहा ''महामंत्री, व्यक्तिगत रूप से मैं नहीं चाहता कि सुशेम महाराज बने। किन्तु राजा के ज्येष्ठ पुत्र को सिंहासन पर आसीन होने में सहयोग देना सेनाधिपति होने के नाते मेरी जिम्मेदारी है, जब कि दो राजकुमारों में प्रतिस्पर्धा चल रही है।''

''आपकी राजभक्ति और कर्तव्य-पालन से मैं बहुत खुश हूँ'' मंत्री ने कहा। थोड़ी देर रुककर मंत्री ने कहना शुरू किया ''परंतु यहाँ एक विषय को ध्यान में रखना चाहिये। जहाँ तक मगध के सिंहासन का संबंध है, राजपुरोहित ही निर्णायक हैं। मगध साम्राज्य की स्थापना के मूलकारक चाणक्य प्रथम राजपुरोहित थे। हमें भूलना नहीं चाहिये कि वे पहले राजपुरोहित थे और बाद ही मंत्री माने जाते थे। याने राजपुरोहित का स्थान मंत्री से उच्च है।''

''आपका उद्देश्य?'' सेनाधिपति ने पूछा।

मंत्री ने बग़ल में ही बैठे राजपुरोहित को देखा।

''मैंने सब राजकुमारों की जन्म-कुंडलियाँ देखीं। केवल अशोक मात्र में सम्राट बनने की योग्यताएँ हैं। सुशेम साम्राज्य की विच्छिन्नता का कारक बनेगा'' राजपुरोहित ने कहा।

सेनाधिपति ने कहा ''ऐसी बात है! तो आप अपनी इच्छा के अनुसार ही निर्णय लीजिये।''

''बहुत प्रसन्न हुआ। अशोक के प्रति मेरा कोई विशेष प्रेम नहीं है। परंतु साम्राज्य के परिरक्षण के लिए ऐसा करना अवश्यंभावी है।'' मंत्री ने कहा।

''हाँ, हाँ, मैं यह जानता हूँ। सेनाधिपति होने के नाते मेरा कर्तव्य है कि यहाँ के विषय तक्षशिला व उज्जयिनी के शासकों को बताऊँ। अभी दूतों को वहाँ भेजूँगा। उन

दोनों में कौन पहले आयेंगे, इसपर निर्भर होंगी भविष्य की कार्य-प्रणाली।''

★ ★ ★

गोधूलि वेला में कमरे में बैठे यश ने वहाँ उपस्थित दो नर्तकियों से कहा ''यहाँ कौन पहले आयेंगे, इसपर आधारित होंगीं बाक़ी बातें।''

वे नर्तकियाँ वही नर्तकियाँ थीं, जो पाँच वर्ष पूर्व अशोक के हत्या-प्रयत्न में विफल हुईं। अशोक ने उन्हें प्राण-भिक्षा दी। फलस्वरूप वे अब तक विदीशा देवी की परिचर्याएँ करती रहीं। अभी-अभी पाटलीपुत्र लौटीं।

नर्तकियों ने पूछा ''बताइये कि हमें अब क्या करना होगा ?'' ''युवराज अशोक ने तुम्हें प्राण-भिक्षा दी। इसके लिए तुम्हें अब प्रत्युपकार करना होगा'' यश ने कहा।

''आप साफ़-साफ़ कहिये कि हम क्या करें?'' नर्तकियों ने पूछा। ''सुशेम की यात्रा में रुकावट डालो। ऐसा करो, जिससे वह देरी से यहाँ पहुँचे। तुम तो घुड़सवारी जानती हो। तुम दोनों के लिए तेज़ दौड़नेवाले दो उत्तम अश्वों व दो रक्षकों को तैयार रखा। तक्षशिला पहुँचने का नज़दीक का रास्ता वे रक्षक जानते हैं। तुम लोग उसी रास्ते में जाओगी और राजदूतों के पहुँचने के पहले ही वहाँ पहुँच जाओगी। राजदूत कल सबेरे निकलने वाले हैं। आज ही रात को तुम निकल पडो।'' यश ने अपनी योजना बतायी।

''आज ही रात को निकलना होगा? बूँदा-बाँदी जो हो रही है'' नर्तकी ने कहा। ''युवराज अशोक सम्राट बनेंगे तो तुम्हारे जीवन में सदा सोने की वर्षा ही होती रहेगी।'' यश ने हँसते हुए कहा।

''अगर विदीशा देवी को मालूम हो जाए कि हमने सुशेम को धोखा दिया तो वे हर्षित नहीं होंगीं। फिर भी हम अशोक का ऋण चुकाएँगी'' एक नर्तकी ने कहा।

''तुम दोनों ने आज तक सन्यासिनियों का जीवन बिताया। अब अपने सहज सामर्थ्य को दर्शाने का सदवकाश तुम्हारे हाथ आया है।'' यश ने उन्हें यों प्रोत्साहित किया।

''यह नैपुण्य हममें पहले था। अब हम बदल गयीं। फिर भी हम परीक्षा कर लेंगीं कि पूर्व शक्ति-सामर्थ्य अब भी हम में हैं या नहीं।'' नर्तकियाँ हँसती हुई बोलीं।

- सशेष

व्यवहार-शास्त्र

शव के अंदर के बेताल ने विक्रमार्क से कहा ''राजन्, मैं जानता हूँ कि तुम धुन के पक्के हो। सफलता तुम्हें वर नहीं रही है, फिर भी उसकी प्राप्ति के प्रयास में अथक परिश्रम कर रहे हो। इस बार भी यथावत् शव को पेड़ से उतारा और अपने कंधे पर डालकर श्मशान की तरफ़ बढ़े चले आये। आधी रात के समय इस भयानक श्मशान में कितनी ही तक़लीफ़ें झेल रहे हो। तुम्हारे इस हठ को देखते हुए मुझे लगता है कि तुम राजनीति के साथ-साथ और अन्य शास्त्रों के भी ज्ञाता हो। लगता है कि तुमने इन शास्त्रों का गंभीर अध्ययन किया। परंतु कोई कितने भी शास्त्रों का अध्ययन क्यों न करे, अगर उसमें व्यवहार-ज्ञान का लोप हो तो अवश्य ही वह जग-हंसाई का पात्र बनेगा। मैं नहीं जानता कि तुममें व्यवहार-ज्ञान किस मात्रा तक है। विकास-विशाख नामक दो शास्त्रज्ञ, अपने

बैताल कथा

पास आनेवाले लोगों को भिन्न-भिन्न पद्धतियों में सलाहें देते रहते थे। उनमें से कौन सच्चा शास्त्रज्ञ है, बताना या जान पाना साधारण व्यक्ति के लिए असंभव है। मैं उन शास्त्रज्ञों की कथा सुनाऊँगा। थकावट दूर करते हुए उनकी कहानी सुनो'' फिर बेताल उनकी कहानी सुनाने लगा।

विलासपुर में विकास नामक एक संपन्न व्यक्ति था। माता-पिता पर्याप्त संपत्ति छोड़ गये थे, इसलिए उसे कोई काम करने की ज़रूरत नहीं थी। आराम से उसके दिन कट रहे थे। फिर भी वह चुप बैठा नहीं रहा। वह शास्त्र-पठन करने लगा। कहीं संदेह हों तो पंडितों से पूछता था और अपने संदेहों को दूर करता था।

थोड़े ही समय में विकास शास्त्र-ज्ञान में निष्णात हुआ। अब उसे लोग बुद्धिहीन लगने लगे। वे जो भी काम करें, उसमें कोई न कोई ग़लती निकालता था। वह उनसे कहता कि ग़लती फलानी है तो वे नाराज हो उठते थे। वह कभी-कभी सोचता कि क्यों अनावश्यक ही अपनी टांग अड़ावूँ। किन्तु बताये बिना उससे रहा नहीं जाता था। क्योंकि उसका विचार था कि ग़लती करनेवाले को सावधान न करना शास्त्र-ज्ञान का अपमान करना है; शास्त्र-ज्ञान इसकी सम्मति नहीं देता।

विकास संपन्न था, इसलिए बहुत-से लोग उससे सलाहें लेने उसके पास आते थे। उनकी उम्मीद थी कि सलाहें तो देगा ही, साथ ही थोड़ी-बहुत आर्थिक सहायता भी पहुँचायेगा। जब तक शास्त्र-ज्ञान में निष्णात नहीं हुआ, तब तक उसकी सलाहें उचित, अच्छी व लाभदायक ही होती थीं।

एक बार बहादूर नामक एक आदमी उसके पास आया और कहा ''महाशय, मेरी पुत्री का विवाह पक्का हो गया। मैंने कहा कि छे महीनों के बाद विवाह संपन्न करेंगे। तब तक जो धन दूसरों से मुझे मिलना चाहिये, मिल जायेगा। किन्तु वर की तरफ़वाले चाहते हैं कि यह विवाह तीन हफ़्तों के अंदर ही हो जाए। विवाह कराने के लिए पाँच हज़ार अशर्फ़ियाँ चाहिये। पर मेरे पास तो केवल दो हज़ार अशर्फियाँ ही हैं। कहिये कि अब मैं क्या करूँ? किसी के मन को ठेस पहुँचाये बिना यह शादी कैसे कराऊँ?''

विकास ने तुरंत कहा ''शास्त्र कहता है कि छे महीनों तक विवाह-मुहूर्त नहीं हैं। छे महीनों के बाद ही शादियाँ हो सकती हैं।

क्या तुम यह नहीं जानते? जाओ और यह बात वरवालों को बता दो।''

''महाशय, वे यह बात जानते हैं। उनका कहना है कि वर का दादा किसी भी दिन मर सकता है। मरने के पहले वह अपने पोते का विवाह देखने आतुर है। उनका यह भी कहना है कि मुहूर्त अच्छा न हो तो विवाह के बाद शांति-पूजा करवायेंगे। उनका आग्रह है कि तीन हफ़्तों के अंदर किसी भी हालत में यह शादी हो जानी चाहिये। लड़का सुंदर है, संपन्न है, गुणी है। मुझे नहीं लगता कि ऐसा रिश्ता हाथ से जाने दूँ तो कभी मिल सकेगा। मेरी दृष्टि में अच्छे मुहूर्त से अच्छा रिश्ता ही प्रधान है। मैं चाहता हूँ कि उनकी मांग के मुताबिक़ ही यह शादी करा दूँ। क्या आप आवश्यक धन देकर मेरी-सहायता कर सकते हैं?'' बहादूर ने नित्संकोच पूछा।

''छी,छी, तुम भी कैसे बाप हो, जो शास्त्रों को ठुकराकर, पुत्री का विवाह करने पर आमादा हो गये। तुम जैसे आदमी की मदद मैं किसी भी हालत में करने को तैयार नहीं हूँ'' विकास ने कहा। ''महोदय, चित्रपुर के विशाख आप से भी अधिक शास्त्र-ज्ञान रखते हैं। अपनी पुत्री के सुख लिए शास्त्रों का भी विरोध करने को तैयार मुझे और मेरे साहस की उन्होंने भरपूर प्रशंसा की। किन्तु आपका यों कहना बहुत ही विचित्र लग रहा है।'' यों कहकर बहादूर वहाँ से चला गया।

बहादूर के व्यवहार से विकास के मन को धक्का लगा। तब वहाँ रविचंद्र नामक एक व्यक्ति आया। वह एक घर खरीदना चाहता है। गाँव के कोने में एक अच्छा घर बिकने
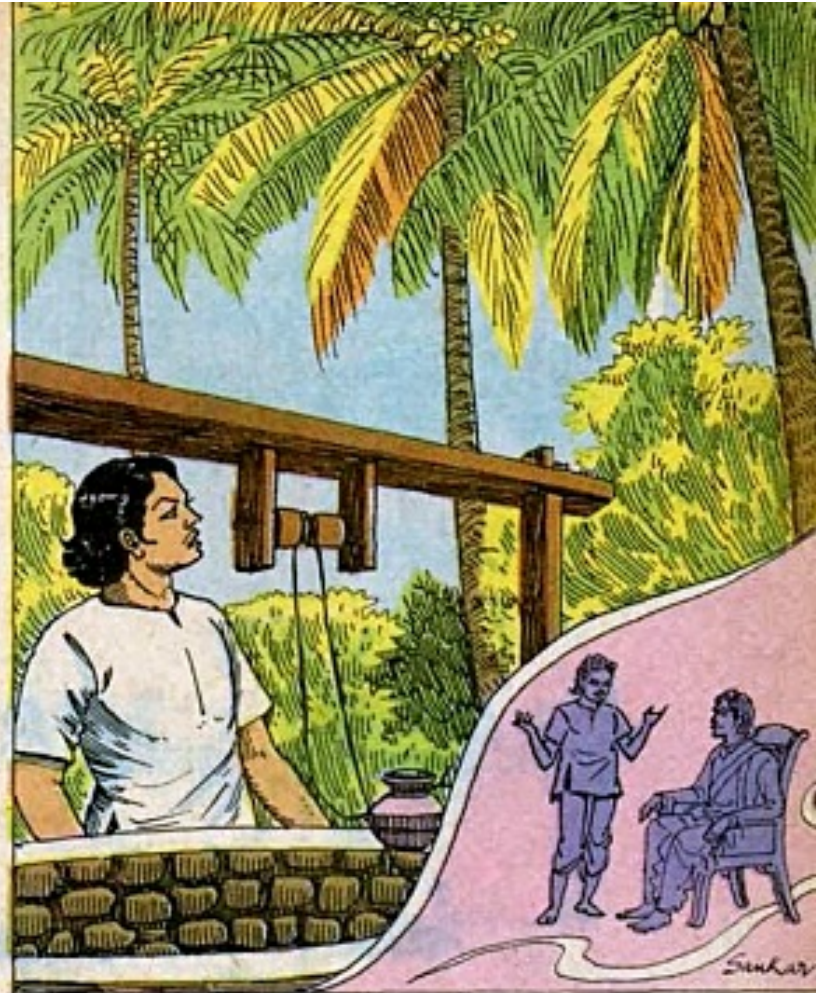
जा रहा है। क़ीमत भी कुछ ज़्यादा नहीं है। जगह बड़ी है। परंतु प्रांगण भर में नारियल के पेड़ भरे पड़े हैं। उनसे साल भर आमदनी होती रहती है, किन्तु रविचंद्र के परिवारवाले नहीं चाहते कि ऐसा घर खरीदा जाए, जहाँ नारियल के पेड़ हों। उन्हें नारियल के पेड़ रास नहीं आते। उनका भय है कि ऐसे घरों से उनकी हानि होगी। उसके घर के पिछवाड़े में नारियल के पौधे जब रोपे गये, तब उसका दादा मर गया। पिता भी बीमार पड़ा तो पौधे तुरंत उखाड़ दिये गये। तब जाकर उसका पिता स्वस्थ हो गया। अब रविचंद्र के पिता की तबीयत फिर से ठीक नहीं है, इसलिए वह घर खरीदने से घबरा रहा है।

विकास सब कुछ जानने के बाद हँस पड़ा और बोला ''अच्छा मुहूर्त देखकर घर खरीदो।

शास्त्र कहता है कि नारियल के पेड़ों से किसी भी परिवार को हानि नहीं पहुँचती । मूढ़ विश्वासों के वश होकर सदवकाश को अपने हाथ से फिसलने न दे ।''

रविचंद्र ने 'न' के भाव में अपना सिर हिलाते हुए कहा ''आप पहले वह घर खरीदिये । प्रांगण में जितने भी नारियल के पेड़ हैं, कटवा दीजिये । तब मैं आपसे वह घर खरीदूँगा । मैंने तो घर के यजमान से ही यह काम करने को कहा । किन्तु उसने यह कहकर इनकार कर दिया कि जिन हाथों से मैंने इन पेड़ों को बड़ा किया, उन्हीं हाथों से इन्हें नहीं काटूँगा । मैंने उसे बहुत समझाया, पर वह टस से मस न हुआ ।''

''तुम भी कैसे आदमी हो, जो फल देनेवाले कल्पतरु को काटने पर ज़ोर दे रहे हो । उस घर के मालिक ने जो भी कहा, ठीक कहा । तुम जैसे मूर्ख को मैं अपना सहयोग नहीं दूँगा ।'' विकास ने फटकारते हुए कहा ।

''आप ही एक ऐसे आदमी हैं, जिन्होंने मुझे मूर्ख कहा । चित्रपुर के विशाख ने मेरा किस्सा सुना और मेरी पितृभक्ति की वाहवाही की ।'' कहकर रविचंद्र वहाँ से चला गया ।

इस प्रकार और कुछ लोगों से भी विकास ने चित्रपुर के विशाख के बारे में सुना । उससे मिलने और उसके बारे में और अधिक जानने के लिए वह उत्सुक हो उठा । शास्त्र-ज्ञान के आधार पर जिन-जिन पर उसने व्याख्याएँ कीं, जिन-जिन के प्रस्तावों को उसने ठुकराया, लगता है, उन सबकी उसने प्रशंसा की; उनके प्रस्तावों को समुचित व सही बताया । क्या सभी की प्रशंसा करना उसकी प्रवृत्ति है? अथवा उसका शास्त्र-ज्ञान भिन्न है? हर कोई उसके शास्त्र-ज्ञान की प्रशंसा भी कर रहा है ।

यों सोचकर विकास ने चित्रपुर जाना चाहा, पर फिर उसे लगा कि जाने के पहले अपने शास्त्र के ज्ञान के विषय में लोगों से उन-उनकी राय जानूँ । उस समय संयोगवश एक योगी उसके घर आया ।

विकास ने योगी का आदर-सत्कार किया और कहा ''स्वामी, मैंने शास्त्रों का अध्ययन किया और बहुत-सा ज्ञान प्राप्त किया । आप कृपया बताएँ कि मेरा शास्त्र-ज्ञान किस स्तर तक पहुँचा है?''

''शास्त्र-ज्ञान से ज्ञान की वृद्धि होती है । पुत्र, शास्त्र-ज्ञान की सीमाएँ नहीं होतीं ।

सब शास्त्रों में से एक ही शास्त्र है, जो मनुष्य को शासित करता है। वह है व्यवहार-शास्त्र। उसे अमल में लाने की हर एक-एक की अपनी-अपनी पद्धति होती है। व्यवहार-शास्त्र कहता है कि सलाहें कम और सहायता अधिक करो, जो तुम्हारे पास आते हैं।''

''शास्त्रों की जानकारी रखनेवाले नहीं चाहते कि मूर्खों की आवश्यकताएँ पूरी की जाएँ। ऐसी स्थिति में सलाहें देने के अलावा कोई और चारा नहीं'' विकास ने अपना तर्क प्रस्तुत किया।

योगी ने कहा ''व्यवहार-शास्त्र का आदेश है कि जिस मनुष्य की सहायता नहीं की जा सकती, उसकी प्रशंसा की जाए।''

विकास ने योगी को संदेह-भरी दृष्टि से देखा और कहा ''स्वामी, मूर्ख की प्रशंसा करना असत्यपूर्ण प्रलाप होता है। शास्त्रज्ञ ऐसा कार्य नहीं करते। यह तो अपने आपको ठगना है।'' विकास की बातों पर अपनी असम्मति जताते हुए योगी ने कहा ''सुनो, मूर्ख की प्रशंसा की पद्धति जानना चाहते हो तो चित्रपुर के विशाख से मिलो। यह पद्धति शास्त्र-सम्मत है। व्यवहार-शास्त्र कोई ऐसा शास्त्र नहीं है, जो किसी के बताने पर ही जाना या सीखा जा सकता है। अतः तुम ध्यान से उसकी बातें सुनो और विषय समझने का प्रयत्न करो।''

योगी के मुँह से भी विशाख का नाम सुनने के बाद उसे लगा कि उससे मिलने में और विलंब करना नहीं चाहिये। दूसरे ही दिन चित्रपुर जाने निकल पड़ा।

उस गाँव में विशाख का भवन बहुत ही बड़ा भवन है। एक बड़े कमरे में कालीन बिछा हुआ है। कमरे के बीचों-बीच विशाख बैठा हुआ है। उसका मुख ज्ञान से दीप्त हो रहा है। बगल में देवदत्त नामक सोलह साल का युवक बैठा हुआ है। उसके दायें हाथ में मुरली है। गोद में एक पुस्तक है। सामने बड़ी पटी और खड़िया है।

विशाख के सामने बहुत-से लोग बैठे हुए है। विकास जब वहाँ पहुँचा तब एक कवि विशाख से कह रहा है'' प्रकृति की शक्तियाँ ही मनुष्य के जीवन के शासन-संचालक हैं। वे ही हमें वर प्रदान करती हैं। इसीलिए मैं स्वरचित कविता को खिली चाँदनी, झर-झर बहते प्रपातों तथा विकसित पुष्पों को सुनाता हूँ। किन्तु अब तक मुझे इसका कोई प्रतिफल नहीं मिला।''

विशाख ने तुरंत देवदत्त को देखते हुए कहा "अपनी किताब में से एक अच्छा गीत सुनाना। इससे मुझे प्रेरणा मिलेगी।"

तब देवदत्त ने स्वरचित एक गीत सुनाया। वह अर्थरहित और भावरहित गीत था। किन्तु विशाख ने उसे सुनते ही कहा "वाह, वाह, कितना अच्छा गीत है। तुम्हारे नाम के अनुरूप ही तुम्हारे गीत भी हैं।" उसने यों देवदत्त की प्रशंसा की और फिर कवि से कहा "महोदय, प्रकृति को कविताएँ सुनाने की इच्छा रखनेवाले आप जैसों का दर्शन-भाग्य मुझे मिला। धन्य हो गया। आप जिन प्रतिफलों की बात कर रहे हैं, उनपर व्याख्या करने का सामर्थ्य मैं नहीं रखता। मैं एक साधारण मनुष्य हूँ। मेरी शक्ति सीमित है।"

कवि खुश होता हुआ वहाँ से चला गया। तब एक किसान ने विशाख से कहा 'महाशय, हर साल फ़सलें अच्छी हो रही हैं और मेरे कुठले भर रहे हैं। किन्तु देखा गया है कि अक़्सर अनाज के दाम कभी बढ़ते हैं तो कभी घटते हैं, इसलिए मैं अपना अनाज बेच नहीं पा रहा हूँ। मेरी समझ में नहीं आता कि बिना नुक़सान के अनाज को कब बेच पाऊँगा।"

तब विशाख ने देवदत्त से कहा "बेटे, मुझे प्रेरित करने के लिए इस किसान की तस्वीर उस पटी पर खींचो।"

देवदत्त ने खड़िया से पटी पर कुछ टेढ़ी - मेढ़ी रेखाएँ खींचीं। विशाख ने तुरंत उसकी तारीफ़ करते हुए कहा "शाबाश! जो आकार है, उसे हू ब हू खींचना संभव है। पर तुमने किसान के मन की खलबली का चित्रण बड़ी ही खूबी से किया।" चंद क्षणों तक उसने आँखें बंद कर लीं और फिर किसान से कहा "अकाल आ जाए तो अनाज का दाम और बढ़ेगा। विदेशों से अनाज का आयात हो तो हमारा सारा सोना वहाँ चला जायेगा। तुम अनाज को जमा करके यह रोक रहे हो। अच्छा हुआ, तुम जैसे व्यक्ति के दर्शन हो गये।"

जैसे ही किसान हर्षित होता हुआ वहाँ से चला गया, एक स्त्री सामने आयी और कहने लगी "महानुभाव, गलतियाँ करने पर भी मैं अपनी संतान को क्षमा करती हूँ। किन्तु मैं यह नहीं देख सकती कि चाहे कोई कितना ही समर्थ क्यों न हो, मेरी संतान से बढ़कर हो, लोगों की दृष्टि में उसका आदर मेरी संतान से अधिक हो। आप ही बताइये कि मुझे तृप्त रहना हो तो क्या करना होगा?"

विशाख ने देवदत्त से मुरली बजाने को कहा और तन्मय होकर सुनने लगा। फिर उसने उसके वादन की प्रशंसा करते हुए कहा "वाह, कितनो मधुर स्वर निकाला है। नाद ब्रह्म भी इतना अच्छा बजा नहीं सकते। तुम धन्य हो।" उसकी प्रशंसा करने के बाद उसने उस स्त्री से कहा "देवी, यह संपूर्ण संसार स्त्री के स्वार्थ के कारण ही पवित्र हो गया। हर माँ यही चाहती है कि उसकी संतान ही सबसे आगे हो और यह स्वाभाविक है। किन्तु सच बोलनेवाली आप जैसी स्त्रीयाँ बहुत कम होती हैं। आप जैसी मातृत्व भरी व सत्यनिष्ठ माता को मेरे सविनय प्रणाम।"

विकास से यह सब कुछ सुना नहीं गया। उसकी सहनशक्ति टूटने लगी। उसकी समझ में नहीं आया कि विशाख के पास आकर लोग आख़िर पा क्या रहे हैं? उनके यहाँ आने का क्या प्रयोजन है? इस विषय में योगी से तर्क करने वह अपने गाँव की ओर निकल पड़ा। गाँव की सरहद पर ही योगी से उसकी मुलाक़ात हुई। विकास ने जो हुआ, सब कुछ योगी को बताया और पूछा, "स्वामी, मेरी समझ में नहीं आता कि विशाख के बारे में इतना बढ़ा-चढ़ाकर क्यों कहा जा रहा है। मुझे तो लगता है कि उसे किसी भी शास्त्र का ज्ञान नहीं है। मेरा संदेह है कि जिन छे शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिये, उनमें से कम से कम तर्क व व्याकरण शास्त्र का नाम भी उसने सुना नहीं होगा।"

योगी ठठाकर हँस पड़ा और बोला "पुत्र, मेरा अभिप्राय है कि जिन शास्त्रों का तुमने उल्लेख किया है, उन शास्त्रों के साथ-साथ व्यवहार-शास्त्र का भी उसने अध्ययन किया होगा। घर जाने के बाद इस शास्त्र का गंभीर मनन करो। साल के अंत में फिर से मैं तुम्हारे यहाँ आऊँगा और देखूँगा कि तुम्हारे पास तुम्हारी सहायता की आशा में जो आते हैं, उन्हें तुम कैसी-कैसी सलाहें दे रहे हो।" कहकर वह आगे बढ़ गया।

बेताल ने कहानी सुनायी और कहा "राजन्, लगता है कि योगी क़ी दृष्टि में विशाख ही विकास से उत्तम शास्त्रज्ञ है। क्या उसने अच्छी तरह से सोचने-विचारने के बाद ही यह निर्णय लिया ? विकास के पास जो आते थे, उन्हें वह सलाहें दिया करता था, चाहे वे उन्हें अच्छी लगें या न लगें। किन्तु विशाख की बात ही कुछ अलग है। देवदत्त नामक मंद बुद्धि के एक युवक की आड़ में

बकबक करता था और अर्थहीन, बेसिरपैर की सलाहें दिया करता था। प्रशंसाओं में डुबोकर सलाह लेने आये लोगों को सानंद भेजता था। भला यह भी कोई शास्त्र-ज्ञान हुआ? तुम्हीं बताओ, यह किस शास्त्र-ज्ञान की श्रेणी में आता है। अलावा इसके, योगी के कहे अनुसार क्या व्यवहार-शास्त्र ग्रंथ नामक कोई शास्त्र है? क्या योगी विकास का मज़ाक उड़ा रहा था? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारा सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जाएँगे।''

विक्रमार्क ने बेताल के संदेहों को दूर करने के उद्देश्य से कहा ''विकास और विशाख के पास जो सलाहें माँगने आते थे, वे सामान्य गृहस्थी थे। शास्त्र का कहा उन्हें समझाना व्यर्थ है। उनकी समस्याओं के परिष्कार का मार्ग सुझाना ज़रूरी है। शास्त्र के नाम पर उन्हें ऐसी सलाहें नहीं देनी चाहिये, जिन्हें वे पसंद नहीं करते या जिनसे उन्हें नुक़सान पहुँचने की गुँजाइश है। ऐसा काम कोई भी व्यवहार-दक्ष नहीं करता। हाँ, विकास ने शास्त्रों का गंभीर अध्ययन किया किन्तु उसे विविध व्यक्तियों की मानसिक समस्याओं तथा उन-उनकी वृत्तियों में उठ खड़ी होनेवाली विविध समस्याओं का ज्ञान नहीं है। शास्त्र में सूचित रेखाओं को पार करने के लिए वह तैयार नहीं है। सब रोगों के लिए उसकी एक ही दवा है। पर विशाख की बात अलग है। उसका शास्त्र-ज्ञान परिपूर्ण है। उसके पास जो सलाहें माँगने आते थे, उन्हें वह गुमराह नहीं करता था। मंद बुद्धिवाले देवदत्त की जो प्रशंसा करता था, वह नाटक मात्र था। तद्वारा लोगों के मन को खुश रखता था। अपने से जो हो सकता था, करता था। समस्या के परिष्कार के नाम पर लोगों को उलझन में डालता ही नहीं था। अब रही, व्यवहार-शास्त्र के बारे में योगी की कही बात। हो सकता है, ऐसा कोई ग्रंथ ही न हो। योगी विकास से कहना चाहता था कि सभी शास्त्रों का सार व्यवहार-शास्त्र में है और उसमें उसका लोप है। इन कारणों से हम इस नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि विशाख ही सच्चा शास्त्र-ज्ञानी है।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित पेड़ पर जा बैठा।

आधार : रमणलाल मुँशी की रचना

पुरी से चांदीपुर

वर्णन : मीरा नायर ◆ चित्रकार : के. एस. गोपकुमार

वास्तुकला का बेजोड़ नमूना कोणार्क का सूर्यमंदिर पुरी के जगन्नाथ मंदिर से 32 कि.मी. दूर है. यह दूरी हम तै करते हैं मरीन ड्राइव नाम की सड़क से, जो अपनी सुंदरता के लिए मशहूर है. इसके एक ओर बंगाल की खाड़ी फैली हुई है तो दूसरी ओर दूर क्षितिज तक धान के खेतों तथा काजू, ताड़, यूकेलिप्टस और झाऊ के झुरमुटों का सिलसिला है.

तटवर्ती इलाके के निवासियों के मुख्य पेशे हैं मछली पकड़ना और धान की खेती. धान की बुआई और कटाई के समय उत्सव मनाये जाते हैं. श्रावण पूर्णिमा को बुआई का उत्सव होता है, जिसमें लड़के गेड़ियों पर चढ़ कर धान के खेतों में घूमते हैं. ऐसी मान्यता है कि इससे धान के पौधे खूब ऊंचे उगते हैं और भरपूर उपज देते हैं.

रथ के आकार में रचा गया काले पत्थर का सूर्यमंदिर समुद्र में कई मील दूर से देखा जा सकता है. यह देश का सबसे विशाल मंदिर था. कभी यह 60 मीटर ऊंचा था और समुद्री नाविक इसे देख कर दिशा पहचानते थे. यूरोपीय नाविक इसे 'ब्लैक पैगोडा' (काला मंदिर) कहते थे और चूने से पुते जगन्नाथ पुरी के मंदिर को 'ह्वाइट पैगोडा' यानी सफेद मंदिर.

श्रावण पूर्णिमा पर धान-बुआई

कथा है कि श्रीकृष्ण और जांबवती के पुत्र सांब को कोढ़ हो गया. तब श्रीकृष्ण ने उसे रोगमुक्त होने के लिए सूर्यदेवता को रिझाने का सुझाव दिया.

सांब ने पूरे बारह बरस तक सूर्यजप करते हुए उग्र तपस्या की और उसका कोढ़ दूर हो गया. कृतज्ञता में सांब ने सूर्यमंदिर बनाया. पास की चंद्रभागा नदी में स्नान करते हुए उसे एक सूर्यमूर्ति मिली. उसे उसने मंदिर में प्रतिष्ठित किया.

चंद्रभागा अब तो एक उथला कुंड रह गयी है, जो मंदिर से तीन कि.मी. दूर है. माघ महीने (जनवरी-फरवरी) के शुक्लपक्ष की सप्तमी के दिन सूर्योदय से पहले भक्तजन इस कुंड में स्नान करते हैं.

माना जाता है कि गंगवंश के राजा लांगुड़ा नरसिंह देव ने 13 वीं सदी में मंदिर का फिर से निर्माण कराया. कहते हैं कि 1,200 कारीगरों और मजदूरों को इसे बनाने में 12 वर्ष लगे.

कथा है कि मंदिर का प्रधानशिल्पी बिसू महाराणा चाहता था कि यह मंदिर वास्तुकला का चमत्कार माना जाए. वर्षों तक वह मंदिर-निर्माण के काम में डूबा रहा और उसे अपनी पत्नी व बच्चे की भी सुध न रही, जो कि अपने गांव में रहते थे. इस बीच उसका बेटा धर्मपद बड़ा हो गया और अपने पिता की तरह उसने भी वास्तुशिल्प सीखा. फिर एक दिन वह पिता की खोज में निकल पड़ा.

तब तक बिसू महाराणा पूरा मंदिर बना चुका था. मगर गणना में कुछ चूक हो जाने से वह मंदिर के शिखर पर आमलक ठीक से बैठा नहीं पा रहा था. इससे मंदिर के पूर्ण होने में देर होने लगी और राजा नरसिंह देव नाराज हो गये. बिसू बहुत परेशान ! तभी धर्मपद वहां आ पहुंचा. चुपचाप उसने गणना ठीक की और मंदिर पूरा हो गया. शिखर तो अब मौजूद नहीं है, फिर भी मंदिर की ऊंचाई 40 मीटर से अधिक है.

कोणार्क का सूर्यमंदिर

मंदिर की रचना सूर्य भगवान के रथ के रूप में की गयी है. सात सजे-धजे, दौड़ते घोड़े उसे खींचते हुए दिखाये गये हैं. ये सात घोड़े सप्ताह के सात दिनों के प्रतीक हैं. रथ के 12 जोड़े पहिये हैं, जो 12 महीनों और 24 पखवारों को सूचित करते हैं. प्रत्येक पहिये में 16 अरे हैं, यानी अहोरात्र के आठ पहरों (यामों) से दुगुने. ऐसा कहते हैं कि इन अरों की परछाईं से दिन का ठीक-ठीक समय जाना जाता था.

अनेक सदियों तक यह मंदिर खंडहर के रूप में उपेक्षित रहा. पर इसकी विशालता के कारण इस सदी के आरंभ में लोगों का ध्यान इसकी ओर गया. जब इस पर जमा हो गयी रेत-मिट्टी हटायी गयी, तब इसकी भव्यता प्रकट हुई. अब यह युनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची में है.

यहां से कुछ किलोमीटर चल कर हम पहुंचते हैं – पारादीप, जिसे उड़ीसा में *पाराद्वीप* के नाम से जाना जाता है. यह देश के बड़े बंदरगाहों में से है. भारत के स्वतंत्र होने के बाद पूर्वी तट पर निर्माण किया गया पहला बंदरगाह यही है. पारादीप का बालूतट बड़ा सुंदर है, जिसके साथ टहलने के लिए सैरगाह है. हर साल दक्षिण अमरीका जैसे सुदूर प्रदेशों से हजारों विशालकाय कछुए यहां अंडे देने आते हैं.
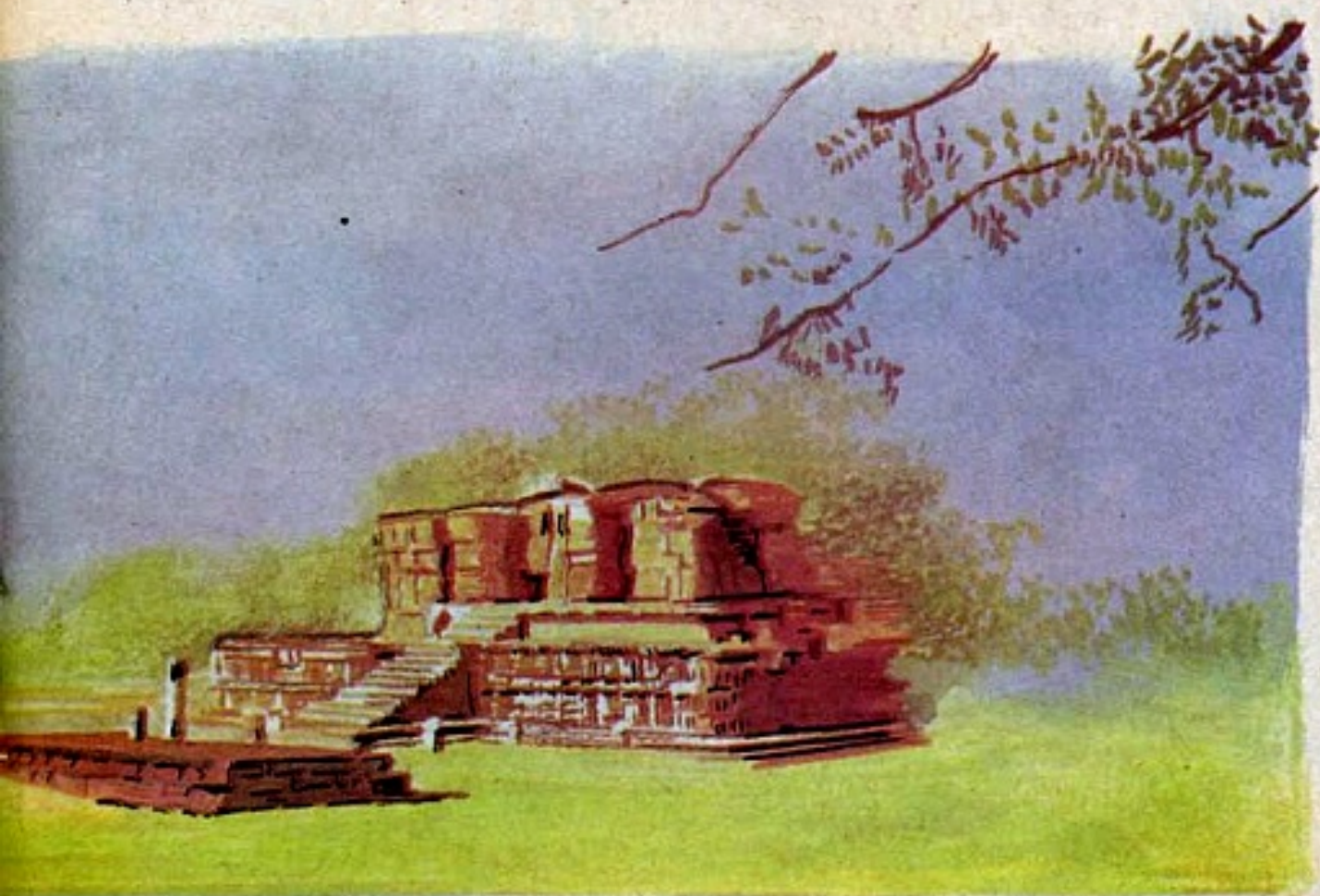
तनिक आगे तट पर गहिरमथा सैंक्चुअरी है. हर साल जनवरी या फरवरी-पूर्वार्ध में सारे विश्व का सबसे बड़ा कछुआ जमघट यहां लगता है. अनुमान है कि कोई 10 लाख कछुए उस समय यहां आते हैं और रेत में अंडे देते हैं. इनमें *ऑलिव रिडले* किस्म के कछुए भी होते हैं, जिनके विलुप्त हो जाने का खतरा है. दस मील लंबे तट पर इस किस्म की 3,00,000 मादाएं आ पहुंचती हैं.

उत्तर दिशा में आगे बढ़ने पर हम पहुंचते हैं बालेश्वर या बालासोर. यह एक व्यापारिक बंदरगाह है, जिसकी स्थापना 1642 ई. में अंग्रेजों ने की थी. यहीं पर महान क्रांतिकारी जतीन्द्रनाथ मुखर्जी (बाघा जतीन) पुलिस के साथ मुठभेड़ में मारे गये थे. वे सितंबर 1915 में यहां आये थे. योजना यह थी कि जर्मन जहाज 'मैवरिक' यहां भारतीय क्रांतिकारियों के लिए शस्त्रास्त्र लायेगा. जहाज तो नहीं आया, मगर पुलिस को सुराग मिल गया और उसने क्रांतिकारियों को घेर कर गोलीबारी शुरू कर दी.

बाघा जतीन

बालासोर जिले में ही चांदीपुर का सुप्रसिद्ध बालूतट है. भाटे के समय यहां समुद्र का पानी पांच कि.मी. पीछे खिसक जाता है और चांदनी रात में गीली रेत ऐसे चमचमाती है, जैसे चांदी की परत बिछी हुई हो.

कछुओं का प्रजनन-काल

महाशिल्पी

हज़ारों सालों के पहले एक गाँव में एक महाशिल्पी रहता था। उसके हाथों कितने ही भव्य भवनों, विशाल व गगन को छूनेवाले मंदिरों का निर्माण हुआ। थोड़े ही समय में उसकी ख्याति देश-विदेशों में फैली।

उस काल में नागलोक के नागराज का भवन भूकंपों के कारण गिर गया। पुन: निर्माण के लिए भूलोक से महाशिल्पी को बुलवाने का निश्चय किया नागराज ने। ख़बर मिलते ही महाशिल्पी बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसे इस बात पर खुशी हुई कि एक और दिव्य भवन के निर्माण का मौक़ा उसके हाथ आया। वह सहर्ष नागलोक गया।

थोड़े ही समय में शिल्पी और नागराज घने दोस्त हो गये। नागराज का परिवार भी उसे अपने ही परिवार का एक सदस्य मानने लगा। अच्छी तरह से उसकी देखभाल करने लगे। किसी प्रकार की कमी होने नहीं दी। फिर भी शिल्पी चाहता था कि एक बार घर हो आऊँ। यद्यपि वह असीम वैभव तथा संपदाओं के बीच रह रहा था, फिर भी उसे अपनी माँ व पत्नी की याद सताने लगी।

एक दिन शिल्पी ने नागराज से कहा "राजन्, आजकल अक्सर मेरा ध्यान अपने घर की ही ओर लगा रहता है। क्या मेरे गाँव की परिस्थितियों के बारे में जानकारी प्राप्त करके मुझे बता सकोगे?"

"सच क्यों छिपाऊँ? तुम्हारे गाँव में इधर कुछ महीनों से वर्षा ही नहीं हुई। लोग भयंकर अकाल का सामना कर रहे हैं।" नागराज ने कहा।

"तो क्या वहाँ बारिश बरसा नहीं सकते?" शिल्पी ने पूछा। "यह तो हो ही नहीं सकता। बारिश बरसाना नियमों के विरुद्ध है। कब और कहाँ अकाल पड़े, इसका निर्णय पहले ही हो जाता है। यह

पचीस वर्ष पूर्व 'चन्दामामा' में प्रकाशित कहानी

अकाल और नब्बे दिनों तक जारी रहेगा'' नागराज ने कहा।

शिल्पी का मन काम में नहीं लग रहा था। नागलोक से वह ऊब गया। यहाँ की हर चीज़ उसे घिनौनी लगने लगी। माँ, पत्नी, भाई-बंधु, दोस्त उसे भूख-प्यास से पीड़ित दिखायी देने लगे। वह कल्पना करने लगा कि वे सब के सब भूख-प्यास के कारण पत्ते और घास खा रहे हैं और धीरे-धीरे मरते जा रहे हैं।

''नागराज, मेरी प्रार्थना सुनो। मुझे अपना गाँव जाने दो। मेरे लोग अन्न-जल के लिए तड़प रहे हैं। उनकी मौत निश्चित लग रही है।'' शिल्पी ने आवेश में आकर कहा।

''अरे भोले, उनके लिए क्यों परेशान हो रहे हो? मेरा भवन-निर्माण जैसे ही पूरा होगा, तुम्हें अद्भुत पुरस्कारें दूँगा। तुम्हें असीम हीरे-जवाहरात, सोना-चाँदी दूँगा। जब तक ज़िन्दा रहोगे, राजा की तरह ज़िन्दगी गुज़ार सकते हो।'' नागराज ने कहा।

''मुझे चाहिए केवल वर्षा। मेरे गाँव के सब लोगों को वर्षा ही चाहिये। तुम्हारे लोग अगर इस तरह भूख-प्यास से तड़प रहे हों तो क्या तुम चुप बैठ सकते हो? उनकी सहायता करने की तुम्हारी इच्छा नहीं होगी?'' शिल्पी ने दुख-भरे स्वर में पूछा।

''मुझे अनावश्यक सताना मत। इतना जान लो कि अब वर्षा नहीं होगी, नहीं होगी'' कहता हुआ नागराज उठकर चला गया। शिल्पी ने भी ठान लिया कि अब मुझे यहाँ नहीं रहना है। वह वहाँ से जाने की तैयारी करने लगा। नागराज को जब यह बात मालूम हुई तो उसने शिल्पी से कहा ''बिना कारण के क्यों इस तरह रूठ गये?'' ''नागराज, मुझे अपना गाँव जाना ही होगा और वहाँ की परिस्थितियाँ जाननी ही होंगी'' दृढ़ स्वर में शिल्पी ने कहा।

''कौन हैं वहाँ? इस दुष्ट को बाँध दो'' नागराज ने अपने सेवकों को आवाज़ दी। क्षण भर में सेवकों ने शिल्पी को घेर लिया।

''अब बताओ, मेरे भवन का निर्माण पूरा करोगे या नहीं?'' नागराज ने कटु स्वर में पूछा। ''मेरे गाँव में बारिश बरसाओगे कि नहीं?'' शिल्पी ने उल्टे सवाल किया।

''पहले ही मैं कह चुका हूँ कि यह संभव नहीं है।'' नागराज ने भी तैश में आकर कहा। ''तब मैं तुम्हारा काम पूरा नहीं करूँगा'' शिल्पी ने कहा।

''इसे ले जाओ और इसका सिर'' कहता हुआ नागराज रुक गया। उसे अकस्मात् याद आया कि अगर शिल्पी चला जायेगा तो भवन-निर्माण कार्य रुक जायेगा। इसलिए उसने हुक़्म दिया ''शिल्पी को छोड़ दो।''

इससे शिल्पी की स्थिति में कोई सुधार नहीं आया। उसे नागलोक से जाने नहीं देंगे। उसका गाँव तो अकाल से पीडित ही रहेगा। वहाँ की स्थिति में भी परिवर्तन की कोई संभावना नहीं। यह सोचते-सोचते निराश होकर शिल्पी एक जगह पर बैठ गया। अचानक उसकी दृष्टि एक स्तंभ पर पड़ी।

शिल्पी फ़ौरन वहाँ से उठा और उस स्तंभ को आरे से काटने लगा। जैसे-जैसे स्तंभ कटता गया, वैसे-वैसे पूरा भवन हिलने लगा। नागराज दौड़ा-दौड़ा आया और गिड़गिड़ाने लगा ''रुक जाओ। मुझपर दया करो। रुक जाओ।''

''तो बारिश बरसाओगे?'' शिल्पी ने पूछा। ''बरसाऊँगा, अवश्य बरसाऊँगा'' नागराज ने कहा।

''देखना, इतना मत बरसाना कि बाढ़ आ जाए। याद रखना, उतना ही बरसाना, जितना पानी मेरे गाँव के लिए आवश्यक है।'' शिल्पी ने कहा।

नागराज ने कहा कि जो तुम चाहोगे, वही होगा। वह जान गया कि जो भवन-निर्माण का सामर्थ्य रखता है, वह भवन-विध्वंस भी कर सकता है। उसके लिए यह कोई असंभव काम नहीं है।

शिल्पी ने कहा ''बस, तुम पानी बरसाओ। फिर देखना, तुम्हारा भवन कितना अद्भुत बनेगा। इंद्र भी देखे तो ईर्ष्या से जल उठेगा।'' नागराज ने अपने दुपट्टे से शिल्पी को ढक दिया और कहा ''तुम अपना गाँव जाना और खुद देख लेना कि वहाँ

कितनी बारिश हो रही है।''

शिल्पी भूलोक आया। उसने अपनी आँखों देख लिया कि उसके गाँव में भारी वर्षा हुई और लोग आनंद में झूमते हुए होहल्ला मचा रहे हैं। किन्तु ग्रामवासियों ने उसे नहीं देखा। उन्होंने देखा, केवल एक महासर्प को।

ग्रामवासियों ने दाँतों तले उँगली दबाते हुए कहा ''बाप रे, इतना बड़ा सर्प!''

''यही हमारे लिए वर्षा ले आया। इसके लिए एक मंदिर बनायेंगे।'' ग्रामवासी चिल्ला पड़े। उन्होंने जल्दी ही एक मंदिर भी बनवाया। अब गाँव में अकाल का सवाल ही नहीं रहा।

नागलोक वापस आकर शिल्पी ने नागराज से कहा ''धोखा देकर मुझे सर्प के रूप में भेजा। मैंने अपने सबों को देख तो लिया किन्तु वे मुझे देख नहीं पाये। उनसे मैं बात नहीं कर सका।''

''तुम बड़े जिद्दी हो। इसलिए मुझे जो करना है, मैंने किया। सावधानी बरती। मैंने अपना वचन निभाया, तुम अब अपना कर्तव्य पूरा करो।''

शिल्पी ने नागराज का भवन अद्‌भुत रूप से बनाया। इंद्र गृह-प्रवेश उत्सव पर स्वयं आया और सचमुच ही उस भव्य भवन को देखकर ईर्ष्या से जल उठा। नागराज ने शिल्पी को बहुत भेंटें दीं और घर भेज दिया।

जब शिल्पी गाँव पहुँचा तो परिचित लोग प्रश्नों की बौछार करने लगे ''अब तक तुम कहाँ रहे? तुम जब नहीं थे, जानते हो, यहाँ कितना बड़ा अकाल पड़ा? कोई देवता सर्प गाँव आया और उसी की कृपा से भारी बारिश हुई। उसके लिए हमने एक मंदिर भी बनवाया। परंतु वह सर्प थोड़े ही दिन ठहरकर कहीं चला गया।''

''मैं ही वह सर्प था'' शिल्पी ने कहा। बहुतों ने उसकी बातों का विश्वास नहीं किया। उसने गाँव के सब लोगों को अपने अनुभव सुनाये। तब जाकर गाँव के लोगों ने उसकी बातों का विश्वास किया। सबको इस बात पर गर्व हुआ कि ऐसा एक धैर्यवान व महाशिल्पी उनके गाँव का है, जिसके कारण गाँव का कल्याण हुआ, नाश होते-होते बच गया।

इसके बाद वह गाँव सर्पपुर नाम से पुकारा जाने लगा।

THEY STOOD UP TO THE BRITISH!
1
मीर कासिम
STORY : MEERA UGRA
PICTURES : GOUTAM SEN
23 जून 1757 को प्लासी (सही नाम 'पलाशी') की लड़ाई जीतने के बाद अंग्रेज बंगाल में सर्वेसर्वा बन बैठे. ईस्ट इंडिया कंपनी ने सूबेदार के पद पर सेनापति मीर ज़ाफ़र को बैठाया, जिसने अपने स्वामी नवाब सिराजुद्दौला के साथ गद्दारी की थी. बाद में 1760 में अंग्रेज़ों ने उसकी जगह उसके दामाद मीर कासिम को सूबेदार बना दिया.
अब शक्तिशाली ईस्ट इंडिया कंपनी का पलड़ा स्थानीय व्यापारियों से भारी हो गया.
जो दाम मैंने बोल दिया, उससे कानी कौड़ी भी ज्यादा नहीं मिलेगी.
सरकार, आप जो दाम कह रहे हैं उससे तीन गुना ज्यादा तो मुझे पहले ही मिल रहा है।
बहस मत कर. यह पेशगी ले जा और माल पहुंचा दे. वरना कोड़े पड़ेंगे.
सरकार, मैं तबाह हो जाऊंगा।

कंपनी के अफसर चुंगी देने से इन्कार कर देते थे.
सरकार, कंपनी को कर से छूट सिर्फ निर्यात-माल पर दी गयी है. चुंगी तो आपको देनी ही होगी.
तुम मुझे कानून सिखा रहे हो ? हट जाओ, मेरे रास्ते से.
इस तरह कंपनी के व्यापारी स्थानीय व्यापारियों के मुकाबले ज्यादा सस्ता माल बेच पाते थे.
मैं तुमसे क्यों खरीदूं, जब कि गोरा साहब तुमसे आधे दाम पर यही चीज दे रहा है ?
वे सस्ता बेच पाते हैं, क्योंकि वे सस्ते में खरीदते हैं और कर भी नहीं देते.
अगर यही सिलसिला चलता रहा तो हम तो बरबाद हो जायेंगे.
व्यापारियों की एक टोली मीर कासिम के पास फरियाद ले कर गयी.
मैं कंपनी के अधिकारियों से बात करूंगा और यह धांधली रुकवाऊंगा.
मीर कासिम ने ईस्ट इंडिया कंपनी के गर्वनर को पत्र लिखा. जब कंपनी ने पत्र का जवाब तक नहीं दिया –
तो ठीक है, अगर मैं अंग्रेजों से कर नहीं उगाह सकता तो अपने व्यापारियों से भी नहीं उगाहूंगा.
© Amrita Bharati, Bharatiya Vidya Bhavan, 1997

मीर कासिम ने तमाम चुंगियां और अंदरूनी महसूल रद्द कर दिये.
भैया, अब तो अंग्रेज जो माल बेच रहा है, उससे बढ़िया माल तुम उतने ही दाम पर हमसे खरीद सकते हो.
अंग्रेज इस बात से आगबबूला हो गये.
मीर कासिम कौन होता है महसूल रद्द करने वाला !
अब हमसे कपड़ा कौन खरीदेगा ?
मीर कासिम अपना आदेश रद्द करने को तैयार नहीं हुआ.
उसे कर-संबंधी कानून बदलने का कोई हक नहीं है.
उसे अपना हुक्म रद्द करना पड़ेगा, या गद्दी छोड़नी पड़ेगी.
कंपनी से कर चुकता कराने का हक मुझे नहीं है. लेकिन सब लोगों पर से कर हटाने का हक तो मुझे है !
21 जून 1763 को पटना की कंपनी की कोठी के मुखिया एलिस ने नवाब के पटना-किले पर चढ़ाई कर दी.
© Amrita Bharati, Bharatiya Vidya Bhavan, 1997/5

22 अक्टूबर 1764 को बक्सर की लड़ाई में मीर कासिम और उसके समर्थकों की संयुक्त सेनाओं को अंग्रेजों ने शिकस्त दी.
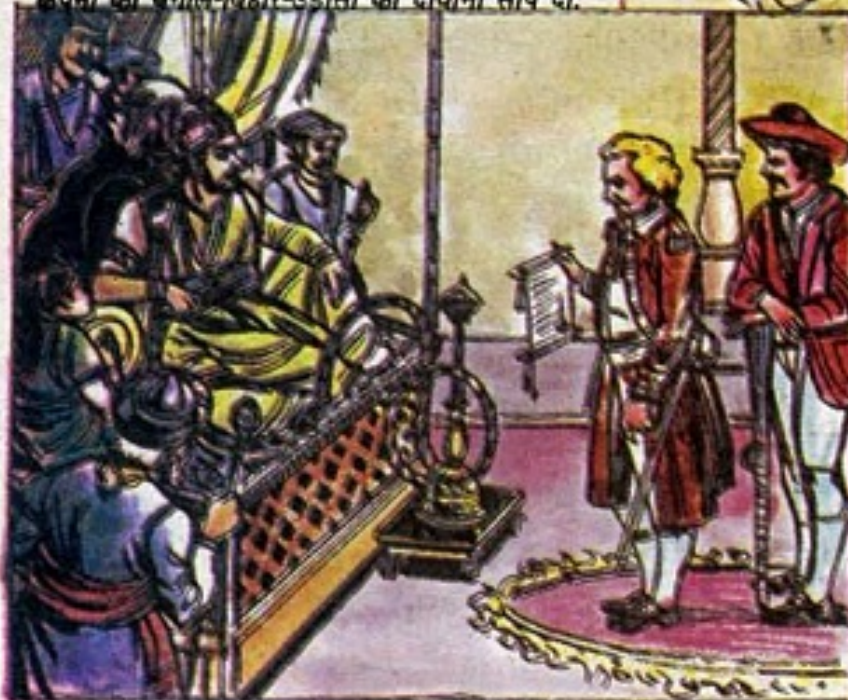
बंगाल को एक बार फिर क्लेश, शोषण और तबाही के गर्त में धकेल दिया गया. चार ही बरसों में उसकी ऐसी दुर्दशा कर दी गयी कि खुद कंपनी के एक कर्मचारी रिचर्ड बीचर ने 24 मई 1769 को कंपनी के नियामक मंडल की गुप्त समिति को लिखा, ''जब से कंपनी ने दीवानी हासिल की है, इस देश के निवासियों की दशा पहले से बदतर हो गयी है; यह सुंदर देश तबाही के कगार पर पहुंच गया है.''

दूसरे दिन प्रातःकाल ही कीचक राजभवन आया। द्रौपदी से मिलकर उसने कहा "तुमने देख लिया न मेरा पराक्रम ! मैंने कल राजसभा में तुम्हें लात मारी तो किसी ने भी मुँह खोलने का साहस नहीं किया। वह विराट राजा नाम मात्र के लिए राजा है। राजा की समस्त सेनाएँ मेरे अधीन हैं। वे मेरी ही आज्ञाओं का पालन करेंगे। मैं ही असली राजा हूँ। मुझसे अपनी सेवाएँ करावो और मुझे धन्य करो। हर दिन तुम्हें सौ सोने के सिक्के दूँगा। तुम्हारी सेवा के लिए अनेकों दासियों का प्रबंध करूँगा। बढ़िया रथ दूँगा।" फिर से उसने गिड़गिड़ाना शुरू किया।

"अगर सचमुच ही तुम मुझे चाहते हो तो तुम्हें मेरी शर्तों को मानना होगा। जो भी करोगे, इन शर्तों की परिधि के अंदर ही तुम्हें करना होगा। इन शर्तों का उल्लंघन नहीं होना चाहिये। यह रहस्य खुल गया तो गंधर्वों को अवश्य मालूम हो जायेगा, इसी का मुझे भय है। मेरी इन शर्तों को मानोगे तो मैं तुम्हारी हो जाऊँगी।" द्रौपदी ने बड़े ही मीठे स्वर में कहा।

कीचक ने उत्साहित होकर कहा "ठीक है, मुझे तुम्हारी शर्तें स्वीकार हैं। किसी की जानकारी के बिना छिपे-छिपे मैं वहाँ आऊँगा, जहाँ तुम आने के लिए कहोगी। तुम्हारे कहे अनुसार सावधानी बरतूँगा, जिससे गंधर्वों को कुछ भी मालूम नहीं हो पायेगा।"

द्रौपदी ने कहा "नर्तनशाला में रात के समय कोई नहीं रहता। वहाँ चुप्पी छायी हुई होती है। अंधेरा अच्छी तरह से छा जाने के बाद तुम वहाँ आना। हम वहाँ मिलेंगे और मिलते रहेंगे तो किसी को मालूम भी नहीं होगा। गंधर्वों से भी यह बात छिपी रहेगी"।

बाद उसने भीम को सविवरण अपनी

योजना का विवरण दिया। मूर्ख, कामुक कीचक जानता नहीं था कि सैरंध्री का आह्वान मौत को गले लगाना है, वह मृत्यु का बुलावा है। दिन भर वह खुश रहा। सैरंध्री से अपने मिलन को लेकर मीठे-मीठे सपने देखता रहा।

भीम भी उस रात का बड़ी ही बेचैनी से इंतज़ार करने लगा। कीचक को अपने हाथों मारने वह उतावला हो रहा था। उसका उत्साह सीमाएँ पार कर रहा था। उसने द्रौपदी से कहा ''उसे छिप-छिपकर मारने की क्या आवश्यकता है ? खुलेआम मार डालूँगा। सबकी आँखों के सामने ही उसे पीस डालूँगा। उसकी हड्डियाँ तोड़ूँगा। उसे मारकर चला जाऊँगा और दुर्योधन का भी अंत कर दूँगा। तुम चाहती हो तो धर्मराज को इस विराट राज्य का राजा बनाऊँगा।''

द्रौपदी ने उसे समझाते हुए कहा ''ऐसे विचारों पर रोक लगावो। अब तुम्हारा काम केवल कीचक को मारना मात्र है'' उसे ज्ञात है कि भीम जब आवेश में आता है तब कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता है।

''ठीक है। आज की रात तुम्हारे कहे अनुसार कीचक का वध कर दूँगा। किसी को मालूम भी नहीं होगा कि उसका वध कैसे हुआ और किसने किया।'' भीम ने कहा।

घने अंधकार में भीम नर्तनशाला पहुँचा। सिंह जैसे हिरन की ताक में बैठा रहता है, उसी तरह वह कीचक की प्रतीक्षा करने लगा।

कीचक ने विविध प्रकारों से अपना अलंकार किया और सुसज्जित होकर सैरंध्री से मिलने नर्तनशाला में प्रवेश किया। भीम पलंग पर लेटा हुआ था। साड़ी पहना हुआ था। कीचक उसका स्पर्श करता हुआ बोला ''मैंने अपने अंतःपुर को तुम्हारे लिये सजाया। कितनी ही दासियों को तुम्हारी सेवा के लिए नियुक्त किया। अपार धन तुम्हारे लिए सुरक्षित रखा। मेरे अंतःपुर की स्त्रीयाँ कहती रहती हैं कि मुझ जैसा सुंदर पुरुष इस भूमि पर है ही नहीं। सदा वे मेरी सुँदरता की प्रशंसा करती रहती हैं। फिर भी मुझे तुम्हारे लिए इस अंधेरे में अकेले ही आना पड़ा''।

भीम ने स्त्री-स्वर में कहा ''तुम सचमुच सुँदर हो। किन्तु ऐसे स्पर्श का अनुभव आज तक तुम्हें हुआ नहीं होगा।'' कहते हुए वह पलंग पर उठकर बैठ गया और कहा ''सिंह जिस प्रकार हाथी को मार डालता है, उसी प्रकार मैं तुम्हें मार डालूँगा। सैरंध्री पर आयी

आपदा को सदा के लिए जड़ से उखाड़ दूँगा।'' कहकर उसने कीचक के बाल पकड़कर खींचा।

कीचक ने अपने बाल छुड़ाये और भीम से जूझ पड़ा। विजय प्राप्त करने की तीव्र इच्छा से दोनों लड़ने लगे। उन दोनों की वह लड़ाई बड़ी ही भयंकर थी। नाखूनों और दाँतों से एक दूसरे की हिंसा कर रहे थे। यद्यपि कीचक, भीम को ज़ोर-ज़ोर से मार रहा था, फिर भी भीम एक ही स्थल पर स्तंभ की तरह खड़ा रह गया। उनकी लड़ाई से नर्तनशाला हिल उठी, काँप उठी।

लड़ाई के बीच भीम ने, कीचक को ज़ोर से लात मारी और नीचे गिरा दिया। उसने जब देखा कि कीचक बिना हिले-डुले जमीन पर पड़ा हुआ है तो उसने उसकी छाती में ज़ोर से मुक्का मारा। फिर उसे उठाकर चारों ओर घुमाया। कीचक का गला पकड़ लिया और दबाया। फिर उसपर चढ़ गया और घुटनों से रौंदने लगा। फिर उसे ऐसा मारता रहा मानों मनुष्य को नहीं बल्कि जानवर को मार रहा हो। उसके मरने के बाद भी भीम ने कीचक को नहीं छोड़ा। उसके हाथ, पैर व सिर को धड़ के अंदर घुसेड़ दिया। यों उसने कीचक के शव को माँस का एक बड़ा पिंड बना डाला।

भीम ने उस स्थिति में पड़े हुए शव को लात मारी। आग जलायी और वह शव द्रौपदी को दिखाते हुए कहा ''तुम्हें जो भी बुरी नज़र से देखेगा, उसका यही हाल होगा।'' फिर वह पाकशाला चला गया।

द्रौपदी ने नर्तनशाला के नौकरों को नींद

से जगाया और उनसे कहा ''गंधर्वों ने नर्तनशाला में कीचक का वध कर दिया। जाओ और स्वयं देखो''। वे घबराते हुए मशालें जलाकर नर्तनशाला में आये। अमानुष रूप से मारे गये कीचक के शव को देखकर वे जान नहीं पाये कि उसके हाथ, पाँव और सिर कहाँ हैं।

कीचक के बंधु-जन रोने-धोने लगे। कच्छप के आकार में पड़े हुए उसके शव को देखकर वे घबरा गये। शव के दहन-संस्कार कार्य में उपकीचक जुट गये। तब उन सबने देखा कि सैरंध्री पास ही के एक स्तंभ से सटकर खड़ी हुई है।

''इसी स्त्री के लिए हमारा भाई मर गया। अपने भाई के शव के साथ-साथ इसका भी दहन करेंगे तो हमारे भाई की आत्मा को

शांति प्राप्त होगी''। उपकीचकों ने यों सोचा और विराट से अनुमति माँगी । विराट में उनके विरुद्ध कुछ कहने का साहस नहीं था, इसलिए उसने अनुमति दे दी ।

उपकीचकों ने द्रौपदी को कीचक के शव के साथ बाँध दिया और श्मशान निकल पड़े। राह में द्रौपदी अपने पतियों के गुप्त नाम ले-लेकर चिल्लाने लगी ''जया, जयंता, विजया, जयस्सेन, जयद्चल, ये उपकीचक मुझे पकड़कर श्मशान ले जा रहे हैं।''

भीम ने ये चिल्लाहटें सुनीं और कहने लगा ''ड़रो मत, मैं आ रहा हूँ।'' अपना वेष बदल लिया और दीवार को फाँदकर श्मशान की ओर दौड़ने लगा।

उसके पहुँचते-पहुँचते चिता तैयार थी। भीम ने तुरंत एक वृक्ष उखाड़ा और उसे अपना हथियार बना लिया। वह उपकीचकों के सामने खड़ा हो गया।

उसे देखते ही ''बाप रे गंधर्व, गंधर्व'' कहकर चिल्लाते हुए द्रौपदी को वहीं छोड़कर उपकीचक नगर की ओर भागने लगे। भीम ने उन एक सौ पाँच उपकीचकों का पीछा किया और उन्हें वहीं का वहीं मार डाला। द्रौपदी को बंधनों से छुड़ाकर उससे कहा ''अब निश्चिंत होकर अंत:पुर लौट चलो। मैं पाकशाला चला जाऊँगा।''

मरकर पेड़ों की तरह निर्जीव हो पड़े हुए उपकीचकों और अंत:पुर लौटती हुई सैरंध्री को देखकर कुछ लोग दौड़े-दौड़े राजा विराट के पास गये और कहा ''महाराज, गंधर्वों ने सैरंध्री को छुड़ा लिया। वह लौटकर आ रही है। वह बड़ी ही सुंदर स्त्री है। जो भी उससे आकर्षित होंगे, उन सबकी यही दुस्थिति होगी। यों हमारे नगर के नाश होने की संभावना है। ऐसा कोई उपाय सोचिये, जिससे उस सैरंध्री के कारण हमें हानि न पहुँचे।''

विराट राजा ने उन्हें सब उपकीचकों को एकसाथ जला डालने का आदेश दिया और सुदेष्णा के पास जाकर उससे कहा ''जैसे ही सैरंध्री लौटेगी, उसे चुपचाप सादर यहाँ से भेज दो। मेरा भय है कि उसके कारण गंधर्वो के हाथों हमारा भी अपमान हो सकता है, हमें भी हानि पहुँच सकती है। उससे यह भी बताना कि उसके समक्ष बताने का साहस मैं नहीं रखता, इसलिए तुम्हारे द्वारा कहलवा रहा हूँ।''

द्रौपदी को लौटते हुए लोगों ने देखा। किन्तु गंधर्वों के भय से वे भाग खड़े हुए, उसे

देखने का उन्हें साहस नहीं हुआ । कुछ लोगों ने भयभीत होकर अपनी आँखें बंद कर लीं ।

जब वह पाकशाला के पास पहुँची तब भीम दरवाज़े के पास मस्त हाथी की तरह खड़ा हुआ था । द्रौपदी ने उससे धीरे-धीरे कहा ''मेरे रक्षक गंधर्वराजा को प्रणाम ।'' भीम ने भी धीरे से कहा ''तुम्हारी सेवा में लगे हम भी ऋण-मुक्त हो गये ।''

द्रौपदी वहाँ से निकलकर नर्तनशाला गयी । वहाँ राजकुमारियों को नृत्य सिखाने में व्यस्त अर्जुन को देखा । उसे देखते ही राजकुमारियाँ और अर्जुन उसके पास आये । भारी विपत्ति से बचने पर सबने उसका अभिनंदन किया ।

अर्जुन ने द्रौपदी से पूछा ''सैरंध्री, तुम कैसे इस विपत्ति से निकल पायी ? वे दुष्ट कैसे मरे ?''

''बृहन्नला, जानकर क्या करोगी ? तुमसे तो कुछ होनेवाला नहीं है । कन्याओं के अंत:पुर में सुखपूर्वक जीवन बिता रही हो । यह जानने की भी चेष्टा नहीं की कि इस सैरंध्री पर क्या बीत रहा है । और अब पूछने लगी हो मेरा कुशल-मंगल । ''यों द्रौपदी ने अर्जुन पर ताना कसा । ''यहाँ आने के बाद आज तक तुम्हारे साथ दोस्ती निभाती रही । तुम्हें क्या मालूम कि इस घटना को लेकर मैं कितनी दुखी हूँ । किसी के मन की भावनाएँ कोई क्या समझे ।'' द्रौपदी राजकुमारियों सहित अंत:पुर गयी । सुदेष्णा ने पति की बातें दुहरायीं और कहा ''तुमसे और तुम्हारे गंधर्वों से महाराज बहुत डर रहे हैं । तुम कहीं और चली जाओ । तुम्हारी सुंदरता किसी भी के मन को कलुषित कर सकती है । लगता है कि गंधर्व बड़े ही क्रोधी स्वभाव के हैं ।''

''महारानी, केवल और तेरह दिनों तक महाराज मुझे यहाँ रहने दें । उसके बाद गंधर्व

Sankar
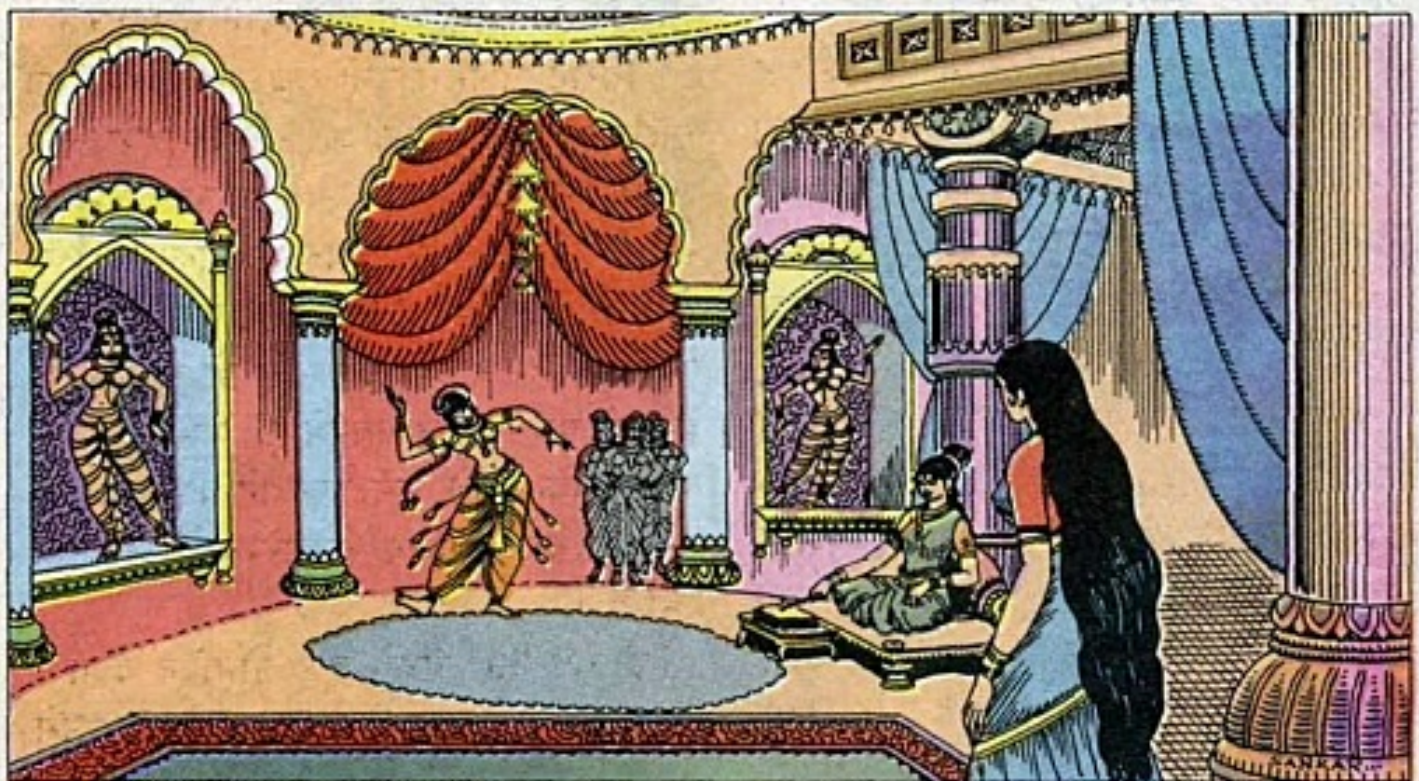
मुझे यहाँ से ले जाएंगे। मैं चली जाऊँ तो आप सब निश्चिंत रह सकते हैं।'' द्रौपदी ने विनती की।

महाबली कीचक और उसके भाइयों की मौत पर विराटनगर के लोगों को दुख हुआ। देश-देशांतरों में ख़बर फैल गयी कि एक स्त्री के कारण कीचक का वध गंधर्वों ने कर डाला। दुर्योधन के गुप्तचरों ने कितने ही देशों, पर्वतों, तीर्थों और गाँवों में ढूंढ़ा। किन्तु पांडवों का कहीं पता न चला। उन्होंने दुर्योधन को यह समाचार सुनाया और अपना संदेह प्रकट करते हुए कहा भी कि शायद वे मर गये होंगे। गंधर्वों के हाथों कीचक के मारे जाने का समाचार भी उन गुप्तचरों ने ही दुर्योधन को बताया।

दुर्योधन ने सभा में उपस्थित लोगों से कहा ''समझ में नहीं आता कि क्या किया जाए। आप भी सोचिए कि क्या किया जा सकता है। पांडवों का अज्ञातवास-काल शीघ्र ही समाप्त होनेवाला है। अवधि की पूर्ति के पूर्व ही हम उन्हें पकड़ पायेंगे तो वचन-बद्ध पांडव अवश्य ही और बारह वर्ष वनवास प्रारंभ करेंगे।''

कर्ण, दुःश्शासन ने सलाह दी कि गुप्तचर कोने-कोने में भेजें जाएँ। द्रोण ने कहा कि वे अवश्य ही जीवित होंगे। उन्हें ढूंढने के लिए ऐसे गुप्तचर भेजे जाएँ, जो उनकी गति-विधियों से भली भाँति परिचित हैं। भीष्म ने भी पांडवों के जीवित होने की आशा व्यक्त की और कहा ''धर्मराज जिस देश में होगा, वह देश अवश्य ही सुसंपन्न व सुस्थिर होगा। वहाँ की प्रजा संतृप्त तथा धर्म-परायण होगी। ऐसे सुसंपन्न देश में ढूंढ़ो।''

कृपाचार्य ने दुर्योधन से कहा ''भीष्म का कहा सच है। पाँडवों को हमें ढूंढ़ते रहना है और साथ ही एक और काम हमें करना चाहिये। पांडव अज्ञातवास-काल पूरा करने में सफल हुए तो लौटने के बाद अवश्य ही युद्ध की घोषणा करेंगे। अतः हमें चाहिये कि हम अपने बल की वृद्धि करें; धन और इकट्ठा करें; देश को सदृढ़ करें। मीठी-मीठी बातें करके या डरा-धमकाकर बलवानों और बलहीनों को भी अपने पक्ष में फिरा लें। ऐसा करोगे तो पांडवों के पक्ष में लड़नेवाले सब राजाओं को युद्ध में हरा सकते हो और सुखी रह सकते हो।

‘चन्दामामा’ की ख़बरें

रेवरेंड स्पैडरमैन

दीवारों पर चढ़ना, भवनों की छतों पर चलना कामिक्स के अदाकार स्पैडरमन के लिए सर्वसाधारण बात है। चलचित्रों तथा कामिक्स चित्रों में यह अदाकारी बहुतों ने देखी ही होगी। यद्यपि स्पैडरमन की तरह तो नहीं, पर बारह से लेकर पंद्रह तक के फुटों की ऊँची दीवारों पर- चाहे उन दीवारों की स्थिति कैसी भी हो, चाहे वे चिकनी हों, या भीगी- रेंगने का सामर्थ्य रखते हैं, केरल राज्य के मुतोली गांव के निवासी रेवरेंड फादर माथ्यू। उन्होंने पुणें में कराटे का प्रशिक्षण पाया और ब्रौन बेल्ट भी हासिल किया। इनका जन्म किसान परिवार में हुआ। दसवीं कक्षा उत्तीर्ण होने के बाद इन्होंने आध्यात्मिक विषयों में आसक्ति दिखायी। चर्च के कार्यकलापों में लगे रहे। इसमें भी शिक्षा पायी और रेवरेंड फादर बने। जिस पक्की छत पर वे रह रहे थे, एक बार एक बिल्ली फँस गयी। उसे नीचे ले आने के लिए कुछ लोग सीढ़ी ले आने चले गये। फादर माथ्यू वहीं रहे। वे झटपट दीवार पर से रेंगते हुए छत पर गये। बिल्ली को सावधानी से पकड़ा और वहाँ से नीचे ज़मीन पर कूद पड़े। रेवरेंड फादर का साहस व सामर्थ्य देखकर उनके सहअध्यापक आश्चर्य में डूब गये।

सुवर्ण रेखाएँ - १६ के उत्तर

संसार में कहाँ?

१. कर्नाटक राज्य के बेलूर के चेन्नकेशव मंदिर में

२. दक्षिण अमेरीका का पेरू ३. पोलांड का वीलिष्का

जंतु-पहेली

१. पेंग्विन २. चिंपांजी ३. जल-तिमिंगल ४. किवी ५. शुतुरमुर्ग ६. ऊँट ७. डिंगो

कथा-पहेली

जल्दबाजी में उसने अपनी साइकिल स्टांड पर छोड़ दी और किसी और की साइकिल लेकर आ गया।

शौकीले सवाल

१. यह एक पेड़ का नाम है २. गेंद को ऊपर फेंकिये। वह लौटकर आयेगी। ३. एशिया के बंदर इस प्रकार की पूँछों से लटक नहीं सकते ४. उसने पेन्सिल लेकर लिखा-अपने बायें कान से ५. जब तक वह नहीं उठता, तब तक इंतजार करते रहेंगे। ६. दो साल का बछड़ा होगा। ७. बढ़ती उम्र।

‘चन्दामामा’
परिशिष्ट
१०७

हमारे देश
की शोभाएँ

मीर्जापूर के कालीन

मीर्जापूर में जिस किसी भी तरफ़ घूमो, साइकिलों पर, तांगों में, मोटरसाइकिलों पर, जीपों में, कभी-कभी ऊँटों पर भी कालीन ही कालीन दिखायी देते हैं। हाथ से बुने कालीनों के लिए मीर्जापूर बहुत प्रसिद्ध है। कहा जाता हैं कि यह कला प्राचीन ईजप्ट से दूसरों ने सीखी थी।

गंगा नदी के दक्षिण में स्थित ‘मीर्जापूर भागोली’ प्रांत में ही हाथ से बुने कालीन अधिक बनते हैं। कश्मीर के कालीनों की तरह नहीं, बल्कि मीर्जापूर के हाथ की बुनाई के मज़दूर पर्शियन डिजाइनों पर ‘नक्शा’ तैयार करते हैं और उसपर कालीन बुनते हैं।

कालीन की किस्मों को ७/५२, या ९/६० कहते हैं। एक चौकोर अंगुल के कितने गाँठ होते हैं, यह जानना हो तो, ऊपर के अंकों को एक के साथ दूसरे को गुनते पर, जो कुल आता है, उसे चार से विभक्त करना चाहिये। इंडो-पर्शियन डिज़ाइन ९/६० की किस्म के हैं। वर्ग मीटर का दाम सात सौ से लेकर नौ सौ रुपयों तक का होता है।

१८५१ में संपन्न लंदन प्रदर्शनीशाला में पहले पहले हमारे देश में बने कालीनों ने संसार का ध्यान आकृष्ट किया। आजकल हमारे देश से कालीनें मुख्यतया जर्मनी, इंग्लैड, अमेरीका, आस्ट्रेलिया आदि देशों में भेजे जा रहे हैं।

पुराणकाल के राजा :

जह्नु

जह्नु उन धर्मप्रभुओं में से थे, जिन्होंने जनता की हर चाह, हर मांग पूरी की। उन्हें किसी प्रकार की कमी आने नहीं दी। उनके शासन-काल में जनता सुखी व शांत थी। प्रजा की स्थिति व उनकी गतिविधियों को जानने के लिए वे स्वयं अक्सर देश में पर्यटन करते थे। वे जब देखते थे कि किसान खेतों में काम पर लगे हुए हैं, बच्चे-जवान खेल-कूदों में मग्न हैं और आनंद लूट रहे हैं तो उन्हें बेहद खुशी होती थी।

एक दिन राजा नदी के तट पर बैठकर बड़े ही ध्यान से नदी-जल को देख रहे थे। नदी-जल निर्विघ्न प्रवाहित हो रहा था। उस नदी-जल को देखते हुए वे सोचने लगे ''काल भी नदी की तरह क्षण भर रुके बिना बढ़ता रहता है। वह काल हाथ से फिसल न जाए, इसके पहले ही अच्छे काम करना मनुष्य का धर्म है। ऐसा करने पर ही मनुष्य-जन्म धन्य व सार्थक होता है।''

''प्रजा का हित करना ही राजा का परम कर्तव्य है। तभी प्रजा सुखी रह सकती है। अड़ोस-पड़ोस के राजा भी धर्मपरायण हैं, शांति-प्रिय हैं, इसलिए प्रजा को शत्रु का भय नहीं है। अतः शेष जीवन योग साधना में बिताया जाए तो काल का सद्विनियोग होगा।'' राजा ने यों सोचा।

राजा ने अपने पुत्र बालकाश्व को राज्य सौंपा और हिमालय पर्वतों में गये। हरिद्वार के परिसर प्रदेश में तपस्या करने लगे। तीव्र योग-साधना की और बहुत ही कम समय में अद्भुत योग-शक्ति प्राप्त की।

एक दिन वे प्रातःकाल पर्वत की चोटी पर खड़े होकर प्रकृति को निहार रहे थे। उन्होंने देखा कि उत्तरी दिशा के पर्वतों से जल-प्रवाह उमड़ता हुआ बढ़ा आ रहा था। क्षण भर में उस जल-प्रवाह ने समतल भूमि पर बने उनके कुटीर को डुबो दिया। जह्नु क्रोधित हो गये और उस संपूर्ण जल-प्रवाह को पी लिया।

भगीरथ के दादा-परदादा पाताल में भस्म की राशियाँ बन चुके थे। उनकी विमुक्ति के लिए भगीरथ ने घोर तपस्या की। अपनी तपस्या-शक्ति से भगीरथ आकाश से भूमि पर यह गंगा-प्रवाह ले आये। भगीरथ ने यह बात जह्नु से बतायी और गंगा को विमुक्त करने की प्रार्थना की। करुणा-भरित जह्नु ने गंगा की धारा कानों द्वारा छोड़ दी। पुराणों का कथन है कि इसीलिए गंगा का नाम जाह्नवी पड़ा।

क्या तुम जानते हो?

ऊँची मीनार

ग्रेटर मास्को के वास्टान्किनोलो की मीनार की ऊँचाई ५२३ मीटर है। किसी दूसरे आधार के बिना खड़ी ऊँची मीनार है यह। एन.बी. निकिटिव नामक शिल्पी से रूपित यह मीनार कांक्रीट से बनायी गयी है। इसका वज़न है ५५,००० टन। मीनार को देखने के लिए आये हुए लोगों को ५०० मीटरों तक लिफ्टों में जाने की अनुमति दी जाती है। लिफ्ट क्षण में सात मील की तेज़ी से ऊपर जाते हैं। मीनार में ३३७ की ऊँचाई पर एक होटल भी है। उस मीनार में टेलिस्कोप के आकार में सिलेंडर है। इसमें बहुत ही शक्तिशाली एरियल्स रखे गये हैं। वे बिजली की कौंध को आकर्षित करते हैं और उनकी शक्ति का अंकन करते हैं।

हवा तेज़ हो तो यह मीनार लगभग पाँच मीटरों तक झुकती है। सूर्य की गर्मी के कारण मीनार का शिखर बढ़ता है। २० डिग्रियाँ सेल्सियसों की गर्मी में मीनार की ऊँचाई क़रीबन् ५४० मीटरों तक बढ़ सकती है, ऐसा निपुणों का मानना है।

इंद्रधनुष

पाब्लो पिकासो

बीसवीं सदी के सुप्रसिद्ध चित्रकार व शिल्पी पिकासो का जन्म १८८१ में स्पेन देश में हुआ। बचपन में ही उन्होंने चित्र कला के प्रति तीव्र अभिरुचि दिखायी। उनके मुँह से निकला पहला शब्द था - लापिज (पेन्सिल)। उनके बारे में कहते हैं कि चलना सीखने के पहले ही वे चित्र खींचना सीख गये। बहुत-से लोगों का विचार था कि वे सांप्रदायिक चित्रकार होंगे। किन्तु उन्होंने चित्रकला के संप्रदायों के बिल्कुल विरुद्ध चित्र खींचे। चारों ओर घिरे संसार को देखने के लिए नये-नये रूपों में नूतन मार्गों को अपनाया। सरल रेखा-चित्रों में बहुत ही कम रंगों का उपयोग करते हुए भावोत्पादक 'क्यूबिस्ट' चित्र खींचने में संसार भर में वे सुप्रसिद्ध थे और हैं।

स्वतंत्रता की स्वर्णजयंती के अवसर पर 'चन्दामामा' की भेंट

प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम

(राजाओं से व्यापार करने की अनुमति पाकर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी क्रमशः एकता के अभाव में विच्छिन्न होते हुए स्थानीय शासकों के भू-भागों को अपने अधीन करने लगी। कुछ ही वर्षों में भारतीय राजाओं पर पाबंदियाँ लगाने की स्थिति तक पहुँच गयी। उसने घोषणा की कि निस्संतान मरनेवाले शासकों के राज्य कंपनी के होंगे। झान्सी के राजा की कोई संतान नहीं थी। मरते समय उन्होंने लक्ष्मीबाई को किसी लड़के को गोद लेने की अनुमति दी। कंपनी ने ऐलान किया कि लक्ष्मीबाई का गोद लेना अवैधानिक है, अतः झान्सी राज्य कंपनी का अपना है। यह समाचार पाकर झान्सी रानी क्रोध से तिलमिला उठीं।)

झान्सी की प्रजा रानी लक्ष्मीबाई को बहुत मानती थी। उनका बहुत आदर करती थी। पंडित, अशिक्षित, व्यापारी, अधिकारी, पुजारी सबके सब अपनी रानी लक्ष्मीबाई को अपना रक्षक मानते थे; उन्हें अपनी माता मानते थे; अपने को सुरक्षित मानते थे। सामान्य प्रजा जब राजप्रासाद से होती हुई जाती थी, तब ''महारानी की जय'' के नारे लगाती थी। मुक्तकंठ से कहती ''महारानी को किसी ने हानि पहुँचायी तो हम हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठेंगी; हम नहीं सहेंगीं। महरानी की रक्षा के लिए हम अपनी जान पर खेल जायेंगीं।'' यद्यपि प्रजा जानती थी कि लक्ष्मीबाई एक नारी है और एक नारी का सबल शत्रुओं का सामना करना कोई आसान बात नहीं, फिर भी उनमें उनके प्रति अगाढ़ विश्वास था।

ईस्ट इंडिया कंपनी झान्सी राज्य को अपने

अधीन कर लेने का निर्णय ले, इसके पहले रानी लक्ष्मीबाई की दिनचर्या संप्रदाय-बद्ध होती थी।

रानी लक्ष्मीबाई हर दिन सूर्योदय के पूर्व ही जाग जाती थीं। गुलाब-जल से स्नान करने के पश्चात चंदेरी साड़ी पहनकर नित्य पूजा-कार्यक्रम में मग्न हो जाती थीं। थोड़े समय तक ध्यान-मग्न रहती थीं। तुलसीवन में तुलसी की पूजा के उपरांत प्रार्थना-पूजा में लग जाती थीं। आस्थान के संगीतज्ञ भक्ति-गीतों का आलाप करते थे। पौराणिक पुराणों का पठन करते थे। बाद आस्थान के प्रमुख व सैनिक आते थे और रानी को सविनय प्रणाम करते थे। वे भी उन्हें प्रणाम करती थीं। आस्थान में लगभग सात सौ पचास लोग काम करते थे। उनमें से कोई एक भी दिखायी नहीं पड़ा तो दूसरे दिन उसका कारण पूछतीं और उससे उसका कुशल-मंगल जानतीं। वह उनकी अद्भुत स्मरण-शक्ति का उदाहरण था।

मध्याह्न सुंदर मुकुट जैसी टोपी पहनकर, पुरुष वेष धारण करके, कमर में रत्न-खचित म्यान में तलवार लटकाकर दरबार में प्रवेश करती थीं। गले में रत्नों का हार होता था। हाथों में वज्रों के वलय होते थे। उंगली में वज्र की अंगूठी मात्र होती थी। बालों का जूड़ा पीछे बंधा हुआ होता था। सफ़ेद साड़ी पहनती थीं। पुरुष वेष में स्त्रीयों के परिधान में शान से दरबार में आतीं उन्हें देखकर लगता था मानों गौरी देवी का आगमन हुआ हो।

वे कभी-कभी कमल तटाक के समीप के महालक्ष्मी मंदिर में जाया करती थीं। एक दिन प्रातःकाल जब देवी का दर्शन करके लौट रही थीं तब उन्होने देखा कि दूर खड़े कुछ लोग उन्हें एकटक देख रहे हैं। उनमें से अधिक लोगों के शरीरों पर कपड़े नहीं थे और वे सर्दी के कारण काँप रहे थे। उनसे
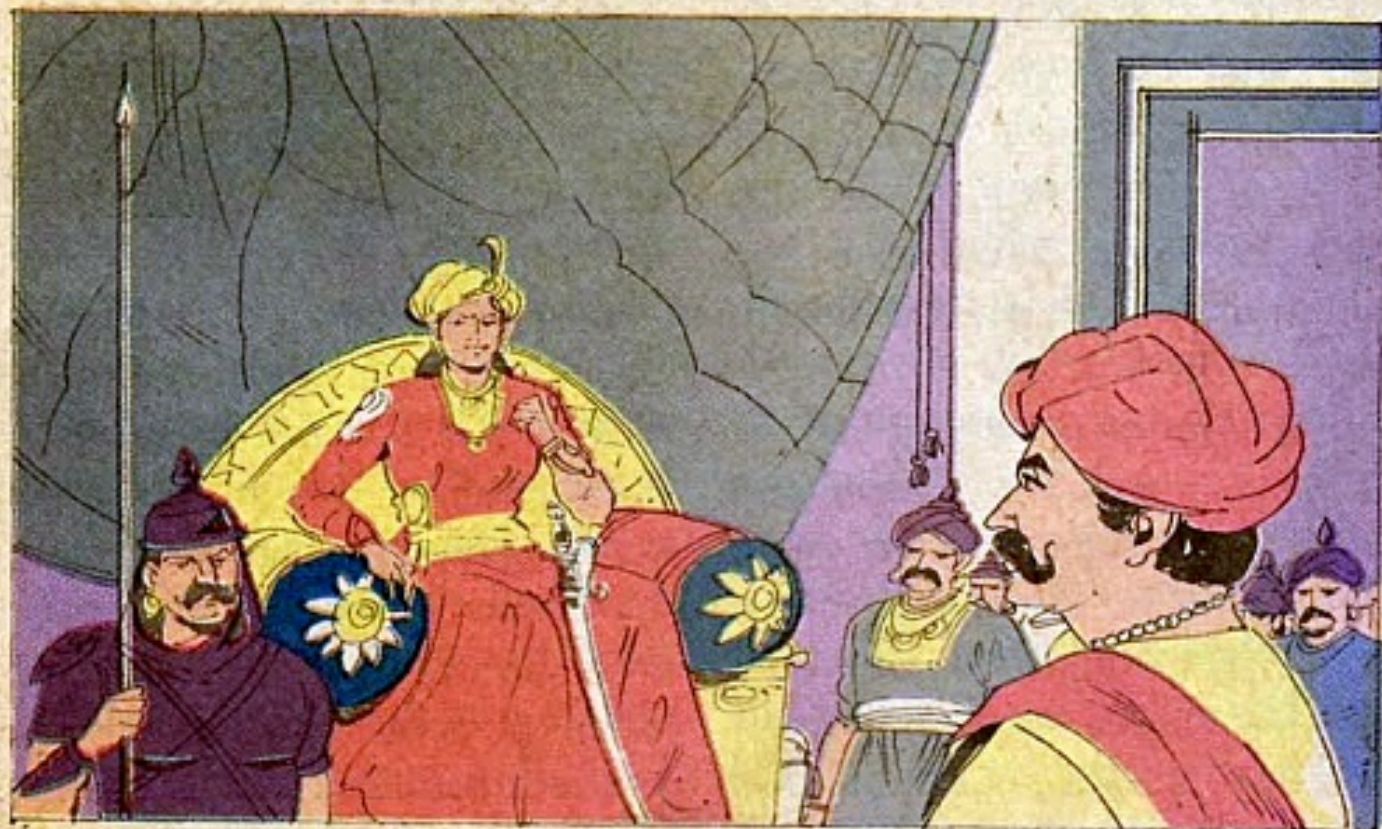
अपनी प्रजा की हालत देखी नहीं गयी। उनकी आँखों में अनायास ही आँसू भर आये। वे सदा सोचती रहती थीं कि प्रजा की स्थिति कैसे सुधरी जाए। इस दिशा में उन्होंने आवश्यक क़दम भी उठाये। किन्तु अंग्रेज़ों के कुत्सित व्यवहार से वे बहुत ही चिंतित रहती थीं। उनको अपने राज्य से दूर रखने के प्रयत्नों में व्यस्त रहती थीं। सदा तत्संबंधी गंभीर चर्चाओं में मग्न रहा करती थीं।

जैसे ही राजभवन पहुँची, दर्ज़ी को बुलवाया और कुरते तथा टोपियाँ सीने का आदेश दिया। हज़ारों कुरते थोड़े ही समय में सिलाये गये। उन्होंने तुरंत उन्हें गरीबों में बाँटा। रानी लक्ष्मीबाई जब अगले सप्ताह मंदिर गयीं तब उन्होंने देखा कि उन सबों ने कपड़े पहन रखे हैं तो उनके आनंद की सीमा न रही। उन ग़रीबों ने भी हाथ जोड़कर रानी को कृतज्ञता-भरे नेत्रों से प्रणाम किया।

झान्सी रानी अपनी प्रजा को बहुत चाहती थीं। प्रजा भी उनका अपार आदर करती थी। किन्तु राज्य की रक्षा के लिए पारस्परिक आदर-अभिमान मात्र पर्याप्त नहीं होते। कंपनी के अधिकारी षड्यंत्र रच रहे हैं। वे दुष्ट कुतंत्र रचकर अपने राज्य को विस्तरित करने की योजनाएँ बना रहे हैं। छोटे-छोटे राज्यों को निगल डालने के लिए किसी भी प्रकार की अनीति के मार्ग को अपनाने के लिए तैयार बैठे हैं। ऐसे क़ाबिल गोरे अधिकारियों का सामना करने के लिए धैर्य के साथ-साथ अक़्लमंदी का होना भी अति आवश्यक है। ऐसे सलाहकार भी चाहिए, जो धैर्यवान व अक़्लमंद हों। यह ज़रूरी है कि श्रेयोभिलाषी तथा सहयोगी एक छतरी के अंदर लाये जाएँ। इस विषय में लक्ष्मीबाई का साथ देनेवाला अग्रगण्य व्यक्ति था, पूरी चंदन हुज़ूर।

प्राचीन पुण्यक्षेत्र के नाम से प्रख्यात पूरी नगर में चंदन हुज़ूर नामक एक युवक रहा करता था। लक्ष्मीबाई जब पाँच साल की थीं, तब अपने माँ-बाप के साथ पूरी पुण्यस्थल गयीं। उस समय जगन्नाथ का दर्शन करने जानेवाले यात्री आलय के पुजारियों की सरायों में ही ठहरा करते थे। ऐसी सराय में ठहरे लक्ष्मीबाई के परिवार की अच्छी तरह से देखभाल की, पुजारी के पुत्र चंदन ने। विशेषतया उसने लक्ष्मीबाई के प्रति सहोदर वात्सल्य दिखाया। लक्ष्मीबाई के माता-पिता ने भी फुर्तीले उस चंदन को अपना सगा बेटा माना। उन्हीं की इच्छा के

अनुसार एक शुभ घड़ी में मंदिर में दिये गये जगन्नाथ के महाप्रसाद को लक्ष्मीबाई ने चंदन के हाथ में रखा और बड़े प्यार से पुकारा ''बड़े भैय्या ।''

''बहुत ही प्रसन्न हुआ बहन। भविष्य में अपने इस बड़े भैय्या के साथ अपने कष्ट-सुखों को बाँटना भूलना मत ।'' चंदन ने आनंद से भरे अश्रु-पूरित नेत्रों से कहा ।

कुछ समय के बाद जब चंदन ने सुना कि लक्ष्मीबाई रानी बन गयीं तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा ।

चंदन के विवाह के अवसर पर लक्ष्मीबाई ने दूत द्वारा कितनी ही क़ीमती भेंटें भेजीं। उन्हें पाकर चंदन बहुत खुश हुआ । किन्तु यह जानकर उसे बहुत दुख हुआ कि झान्सी राज्य और झान्सी रानी विपत्ति में फँसे हुए हैं। यह जानकर उससे वहाँ रहा नहीं गया। उसे अपने बचपन की बात याद आ गयी। उसने लक्ष्मीबाई से कहा था कि कष्ट-सुख समान रूप से आपस में बाँटेंगे। बहन कष्टों में हो और भाई विवाह करके सुखी रहे ? उसकी आत्मा उसे धिक्कार रही थी। इसलिए विवाह के दूसरे ही दिन दूत के साथ-साथ वह भी झान्सी निकल पड़ा ।

चंदन के झान्सी के पहुँचने के पूर्व ही वहाँ की परिस्थिति और तीव्र हो गयी। चंदन को देखते ही झान्सी की आँखें एक क्षण भर के लिए आनंद से चमक उठीं । परंतु इस बात पर उसे दुख हुआ कि विवाह के दूसरे ही दिन अपनी पत्नी को छोड़कर यहाँ चला आया। उसने चंदन से इस बारे में पूछा ।

उसने बताया ''जब बहन विपत्तियों से

घिरी हुई हो, तो क्या कोई बड़ा भाई चुप बैठा रह सकता है?'' फिर उसने अपने कंठस्वर के वेग को घटाते हुए पूछा ''यह बात भूल जाओ और बताओ कि अगर युद्ध छिड़ जाए तो क्या अन्य राज्यों के राजा तुम्हारी सहायता करेंगे ?''

''कुछ राजाओं ने तो खुल्लमखुल्ला सहायता पहुँचाने की घोषणा की। कुछ और राजा इस विषय में मौन रह गये। किन्तु मेरा विश्वास है कि विश्वासघाती गोरों से जो युद्ध होगा, उसमें अवश्य ही सबों की सहायता मुझे प्राप्त होगी, कोई भी चुप बैठा नहीं रहेगा ।''

''बहन, फिर भी ऐसी भी घटनाएँ घट सकती हैं, जिनकी हम कल्पना नहीं कर सकते। कल रात को जिस सराय में मैं ठहरा था, वहाँ मैंने दो मुसाफ़िरों की बातचीत

सुनी। एक मुसाफ़िर ग्वालियर का है। दूसरा टेहरी का है। क्या उन दोनों राज्यों के राजा तुम्हारे ही पक्ष में हैं?''

''भैय्या, मैं यह नहीं जानती कि वे मेरे पक्ष में हैं या नहीं।'' लक्ष्मीबाई ने कहा।

''उन मुसाफ़िरों की बातचीत से मुझे लगा कि वे दोनों राजा कंपनी के पक्ष में हैं।'' चंदन ने कहा। ''ऐसी बात है !'' रानी ने आश्चर्य प्रकट किया। ''मेरी तो यही आशा है कि मैंने जो सुना, वह सच न निकले। फिर भी कुछ राजा, खासकर तुम्हारे रिश्तेदार-राजा शत्रु पक्ष में हों तो परिणाम बड़ा भयानक होगा। तुम्हें नाना साहेब की सहायता प्राप्त होगी। तुम दोनों मिल जाओ तो कंपनी का सामना कर सकोगी।'' थोड़ा रुककर फिर उसने कहा ''जो भी हो, बड़े भाई की इस इच्छा को मत ठुकराना बहन।''

''कहो भैय्या, तुम्हारी क्या इच्छा है?'' रानी ने पूछा। ''अनुमति दो कि मैं हमेशा तुम्हारे ही साथ रहूँ। जब तक जान है तब तक तुमपर कोई आपदा आने नहीं दूँगा। तुमपर अगर कोई आपदा आये तो वह मेरे शव पर से ही गुज़रेगी।''

''भैय्या, मेरी रक्षा के संबंध में तुम इतना परेशान न होना। अपने पति की मृत्यु के बाद अगर मैं जीवित हूँ तो प्रजा की रक्षा के लिए जीवित हूँ। प्रयोजनहीन जीवन के प्रति न ही मेरी कोई रुचि है, न ही कोई आशा। उसी प्रकार मैं निरुपयोग ही मरने की इच्छा भी नहीं रखती। एक अच्छे कार्य के लिए मौत के गले लगना अपना महाभाग्य मानती हूँ। हाँ, एक ही बात का मुझे दुख हो रहा है कि मेरे साथ-साथ मासूम जनता भी मारी जायेगी।'' रानी लक्ष्मीबाई ने गंभीर स्वर में कहा। ''बहन, जनता साहसी है, उनमें अपार धैर्य है। स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए वे अपनी जान भी निछावर करने सन्नद्ध हैं।'' चंदन ने कहा।

थोड़ी देर मौन धारण करने के बाद लक्ष्मीबाई ने कहा ''बड़े भैय्या, मैं चाहती हूँ कि तुम लौट जाओ और अपनी धर्मपत्नी के साथ आनंदमय जीवन बिताओ। मुझे तुम्हारे आशीर्वाद मात्र काफी हैं।'' कहती हुई उसने नमस्कार किया।

''मेरे आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ हैं। उसी तरह सदा मैं तुम्हारे ही संग रहूँगा।'' दृढ़ स्वर में चंदन हुज़ूर ने कहा।
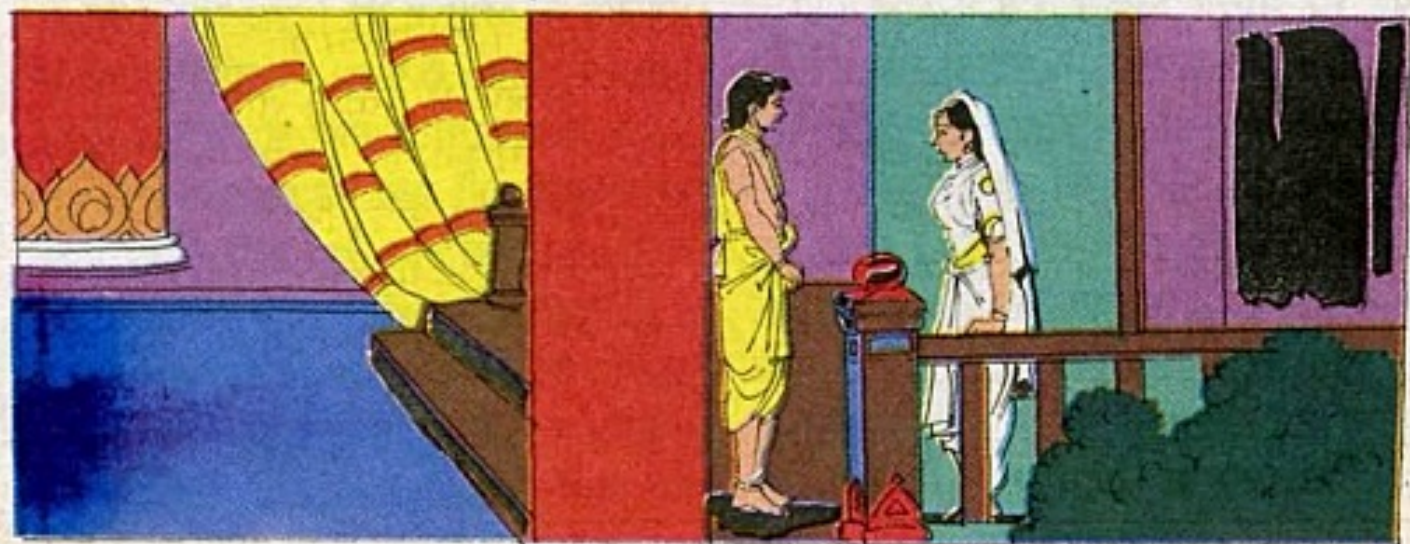
परिवर्तन-एक मृगतृष्णा

भवानीपुर में कांक्षित नामक छोटा-सा व्यापारी रहता था। बीस साल की उम्र में उसके माता-पिता नाव की एक दुर्घटना में मर गये। इस घटना के बाद कांक्षित में जीवन के प्रति विरक्ति उत्पन्न हो गयी। कुछ रिश्तेदारों ने सलाह दी कि विवाह कर लोगे तो तुम्हारी मानसिक अशांति दूर हो जायेगी।

"मेरा व्यापार छोटा है। जीवन में कोई परिवर्तन नहीं और इसकी संभावना भी नहीं है। इस स्थिति में विवाह करूँ तो वह बोझ ही साबित होगा। जो जन्म लेता है, उसे मरना ही होगा। मरते तक इसी तरह की ज़िन्दगी गुजारूँगा। मुझे कोई परिवर्तन नहीं चाहिये"। कांक्षित ने अपना निर्णय सुनाया।

"भाग्य में जो लिखा है वही होकर रहेगा। परिवर्तन नहीं चाहते हो तो क्या नहीं होगा? अगर परिवर्तन चाहते हो तो क्या वह तुम्हारी अनुमति लेकर ही आयेगा? इस छोटी उम्र में इतनी विरक्ति अच्छी नहीं" उसके रिश्तेदारों ने उसे यों बहुत समझाने की कोशिश की, पर उसने उनकी बातों की कोई परवाह नहीं की। उसने अपने आप कहा "भाग्य पर भरोसा करनेवाले ये लोग मुझे सलाहें देने चले आये। मेरे भाग्य में जो लिखा है, वही होकर रहेगा। भाग्य में जो लिखा है, भला उसे कौन टाल सकता है।"

उस समय शिवानंद नामक एक योगी उस गाँव में आया। वह जनता को भूत, भविष्य, वर्तमान के बारे में बताता और उन्हें उनके कर्तव्यों का बोध कराता। उसने अपनी दिव्य शक्ति से सभी को आकर्षित किया। कांक्षित से उससे मिलने के लिए कहा गया तो उसने इनकार कर दिया। शिवानंद ही उससे मिलने आया।

कांक्षित ने उसका आदर-सत्कार किया।

योगी संतुष्ट हुआ और कहा "पुत्र, जीवन भगवान का दिया हुआ वरदान है। जब तक मनुष्य जीवित है तब तक उसे उल्लसित रहना चाहिये"।

"काम, भोजन, निद्रा-यही तो है जीवन। मैं ऐसे इस जीवन से विरक्त हो गया हूँ। मैं उल्लासपूर्वक जीवन बिता नहीं पा रहा हूँ"। कांक्षित ने योगी से कहा।

"उल्लासमय जीवन बिताना चाहते हो तो बताओ तो सही, जीवन कैसा हो ?" योगी ने कुतूहल-भरे स्वर में पूछा।

"अकस्मात् मेरी संपत्ति दस लाख अशर्फ़ियों की हो जाए। मेरी पत्नी राज कुमारी हो। सदा सभी मेरी प्रशंसा करते रहें। तब मुझे मेरा जीवन उल्लासमय लगेगा।" कांक्षित ने कहा।

इसपर शिवानंद ने मुस्कुराते हुए कहा "हर कोई अपने-अपने जीवन का अधिपति है। उसकी पत्नी राजकुमारी क्यों ? महारानी होगी। हर एक को उसका अपना जीवन दस लाख अशर्फ़ियाँ का ही क्यों ? करोड़ अशर्फ़ियों के मूल्य का लगेगा। दूसरे जब तक हमारी निंदा नहीं करते तब तक समझना, वे हमारी प्रशंसा ही कर रहे हैं। सब कुछ हमारी कल्पना पर आधारित है। अगर तुम महसूस कर रहे हो कि मेरे पास कुछ है तो ऐसा कुछ नहीं, जो तुम्हारे पास नहीं है। अगर तुम समझ रहे हो कि मेरे पास कुछ है नहीं, तो तुम्हारे पास कुछ होगा ही नहीं"।

"योगिवर, यह सब कुछ वेदांत है। मुझे जैसे सामान्य व्यक्ति की समझ के बाहर है। अतः मेरी इच्छाओं की पूर्ति के कोई मार्ग हों तो बताइये। नहीं तो यथावत् अपनी ज़िन्दगी ऐसे ही गुज़ारने दीजिये"। कांक्षित ने दृढ़ स्वर में कहा।

"तो किसी ऐसी सुंदर, सुशील कन्या से विवाह करो, जो तुम्हें अच्छी लगे। इसके बाद तुम्हारी संपत्ति दस लाख अशर्फ़ियों के मूल्य की होगी। तुम्हारी पत्नी राजकुमारी होगी। हर हमेशा सभी तुम्हारी ही प्रशंसा करते रहेंगे" योगी ने सलाह दी।

कांक्षित की आँखों में आनंद उमड़ आया। फिर भी उसने अपना संदेह व्यक्त किया "योगिवर, कहीं यह वेदांत तो नहीं ?"

शिवानंद ने आश्वासन देते हुए कहा "मैंने जो कहा, वे सब के सब मेरे कहे अनुसार ही होंगे। किन्तु एक और बात है, जो सच है। इतना सब कुछ होने के बाद भी तुम्हारा

जीवन पूर्ववत् ही चलता रहेगा। उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होगा। उल्लास, उत्साह, आनंद, उमंग, धन, सुख, प्रशंसा से प्राप्त नहीं होते। उनका जन्म होता है-अच्छी भावनाओं से, अच्छे विचारों से। इसके लिए चाहिये अच्छा व शुद्ध मन।''

योगी की बातों ने कांक्षित को बहुत प्रभावित किया। उसने सुंदरी अंबा से शादी की। अंबा गुणवती थी। काम भी बड़े ही सुचारू रूप से करती थी। पति का बड़ा ख्याल रखती थी। उसे किसी प्रकार का कष्ट पहुँचने नहीं देती थी। हर हालत में उसे सुखी रखती थी। जो भी वह काम करती थी, उसी को दृष्टि में रखकर करती थी।

विवाह के एक साल बाद उनका एक सुंदर पुत्र हुआ। कांक्षित अपने पुत्र को बहुत चाहने लगा। वह नहीं चाहता था कि उसके पुत्र का जीवन उसके जीवन की तरह कष्टमय हो, इसलिये व्यापार में और ध्यान लगाकर परिश्रम करने लगा। फिर भी उसके व्यापार में कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई। यद्यपि आमदनी में थोड़ी-बहुत बढ़ौती हुई, पर खर्च भी उसी के अनुपात में क्रमशः बढ़ने लगा।

अंबा किफ़ायत बरतती थी। कभी भी उसने गहनों और क़ीमती साड़ियों के लिए पति को नहीं सताया। अक्सर अपने पति से कहती ''पेट भर खा रहे हैं। जो खाते हैं, उसे पचाने के लिए हमारा आरोग्य भी अच्छा है। रहने के लिए बड़ा और अच्छा घर भी है। इससे बढ़कर हमें और क्या चाहिये''?

फुरसत के समय अंबा संगीत का अभ्यास करती थी। इससे उसे और उसका संगीत

सुनते हुए कांक्षित के दिल को शांति मिलती थी। अंबा का संगीत-ज्ञान सहज था। उसने क्रमशः संगीत में प्रवीणता पायी। एक वर्ष के अंदर ही नगर में संपन्न संगीत-स्पर्धाओं में वह सर्वोत्तम चुनी गयी और भेंटे पायीं।

मालूम हुआ कि नगर की सरहदों पर वज्रों की खानें हैं। कितने ही वज्र-निपुण, व्यापारी भवानीपुर आकर बसने लगे। गाँव की ज़मीन का दाम बहुत बढ़ गया, इसलिए गाँव के लोग अच्छे दामों पर अपनी ज़मीन बेचने लगे और गाँव छोड़कर चले जाने लगे। कांक्षित व्यापारी था, इसलिए नयी जगह पर जाकर व्यापार करने की उसकी इच्छा नहीं हुई। वह उसी गाँव में रह गया।

कांक्षित के इर्द-गिर्द जितने भी थे, धन

व सुख-भोग में डुबकियाँ लगा रहे थे। पर उसकी आमदनी मासिक थी। उसकी कमायी उन धनियों के सुख-भोग के लिए एक दिन के लिए भी पर्याप्त नहीं। पर उन सबकी कोई न कोई बुरी लत थी। कांक्षित मात्र ही उनके बीचों-बीच सामान्य व्यक्ति था।

एक प्रकार से कांक्षित अपने को अकेला महसूस करने लगा। इतने भाग्यवानों के बीच वह एकमात्र दरिद्र था। यद्यपि वह कोई दरिद्र नहीं था, परंतु दूसरों का भाग्य उसे ऐसा सोचने से मजबूर कर रहा था।

''योगी ने मुझसे झूठ कहा। शादी हुए पाँच साल बीत गये। मेरी जायदाद में कोई बढ़ौती नहीं हुई। मेरी पत्नी राजकुमारी नहीं बनी। मेरी कोई प्रशंसा नहीं कर रहा है।'' यों सोचकर मन ही मन कांक्षित कुढ़ने लगा।

इस स्थिति में शिवानंद, कांक्षित से मिलने आया। उस समय वह अपने बेटे के साथ खेल रहा था। योगी ने उससे कहा ''वाह, अब तेरे मुख पर उल्लास व्याप्त है। तुम उत्साही दिख रहे हो। लगता है विवाह से तेरे जीवन में परिवर्तन आ गया।'' कांक्षित ने बेटे को अंदर भेज दिया और योगी को प्रणाम करके कहा ''स्वामी, अब मैं जीवन से विरक्त नहीं हूँ। किन्तु उल्लेखनीय परिवर्तन मेरे जीवन में नहीं हुए, जिनके बारे में पूर्व आपने कहा था।''

योगी ने हँसकर कहा ''मैंने जिन-जिन परिवर्तनों के बारे में बताया था, वे सब के सब तुम्हारे जीवन में हुए। मैंने कहा भी था कि फिर भी तुम्हें तुम्हारा ज़ीवन यथावत् लगेगा और होगा। वही हुआ, जो मैंने कहा।''

कांक्षित ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा ''स्वामी, यह सच है कि मेरा जीवन यथावत् है। पर जिन परिवर्तनों का जिक्र आपने किया, वे मेरे जीवन में कैसे आये और मेरी जानकारी के बिना ही चुपचाप कैसे चले गये, सविस्तार बता सकते हैं?'' तब बग़ल के घर से एक बूढ़ी औरत आयी और कांक्षित को संबोधित करती हुई बोली ''पुत्र, तुम जैसे उत्तम मनुष्य को जन्म देनेवाले माता-पिता धन्य हैं। मेरे भी पुत्र हैं, परंतु क्या लाभ। तीनों के तीनों शराबी हैं। थोड़ी देर के लिए तुम्हारे घर में बैठूँगी और पुराण-पठन करके जाऊँगी। तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है न?''

कांक्षित की अनुमति लेकर वह अंदर चली गयी। योगी ने मुस्कुराते हुए कहा ''तुम्हारे

अड़ोस-पड़ोस के लोग बुरी लतों के शिकार हैं। हर दिन कोई न कोई तुम्हारी प्रशंसा कर रहा है अथवा नहीं ?''

कांक्षित हक्का-बक्का रह गया और सच मान लिया। इतने में कांक्षित की पत्नी योगी के लिए दूध ले आयी। योगी ने दूध का गिलास हाथ में लेते हुए कहा ''पुत्री, कुछ दिनों के पहले तुम्हें संगीत-स्पर्धाओं में भेटें मिली थीं न? वहाँ तुम्हें क्या उपाधि मिली?''

शरमाती हुई उसने सिर झुकाकर कहा ''संगीत राजकुमारी।'' ''देखा, तुम्हारी पत्नी राजकुमारी हो गयी न?'' योगी ने कहा। फिर भी कांक्षित ने अपनी असंतृप्ति जताते हुए कहा ''किंतु मेरी संपत्ति के विषय में ऐसा कोई परिवर्तन नहीं हुआ न?''

''अपना घर और खाली जगह बेचोगे तो क्या किसी से पूछकर जाना कि तुम्हें कितना धन मिलेगा ?'' योगी ने पूछा।

कांक्षित चौंककर बोला ''हाँ, यह दस लाख अशर्फ़ियों के मूल्य की है। किन्तु इन्हें बेचकर मैं कहाँ जाऊँ? इसी नगर में पैदा हुआ, पला, नगर का चप्पा-चप्पा जानता हूँ।''

''तुम्हारा भाग्य अच्छा है, इसलिए तुमने जीवन में जो-जो परिवर्तन चाहे, संभव हुए। फिर भी तुम्हारा जीवन यथावत् है, इसका एक कारण है - तुम्हारे विचारों में, तुम्हारी भावनाओं में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। जिस जगह पर रह रहे हो, वहीं रह गये और व्यापार में ही लगे हुए हो। फिर भी तुम चाहते हो कि जीवन-शैली में परिवर्तन हो। कितने ही परिवर्तनों से तुम गुजर चुके, फिर भी इस कारण तुम्हें लगता है कि जीवन जैसा था वैसा ही है। तुम सचमुच परिवर्तन चाहते हो तो यह आवश्यक है कि तुम्हारी विचार-पद्धति में परिवर्तन आये। बोलो, तुम्हारा क्या विचार है?'' शिवानंद ने पूछा।

अब कांक्षित की आँखें खुल गयीं। उसने योगी को प्रणाम करके कहा ''योगिवर, मेरा जीवन बहुत ही अच्छा है। इस भाग्य को पहचाने बिना मैं परिवर्तन की मृगतृष्णा के पीछे भागता रहा। यह मेरी भूल है। मैं यहीं रहूँगा। ऐसा ही जीवन बिताऊँगा। आगे से मेरे जीवन में निरुत्साह का, उल्लासहीनता का कोई स्थान नहीं।''

योगी संतृप्त होता हुआ वहाँ से चला गया।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता : : पुरस्कार रु. १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, दिसम्बर, १९९७ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

MAHANTESH C. MORABAD

MAHANTESH C. MORABAD

* उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। * '२५ अक्तूबर,९७ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। * अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। * दोनों परिचियोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास - २६.

अगस्त, १९९७ की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **मैं ममता की छाँव में**

दूसरा फोटो : **गुडिया गुडिया की बाहों में**

प्रेषक : **तिलकराज गुप्ता**

C/o. Sri जे.पी. गुप्ता, वकील, अग्रासैन नगर, पवर हाउस, लडबा (पो.), कुरुक्षेत्र, हरयाणा - १३६ १३२.

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., Chandamama Buildings, Chennai - 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, 188, N.S.K. Salai, Vadapalani, Chennai - 600 026 (India) Editor : NAGI REDDI.

THE MOST ENDEARING GIFT YOU CAN THINK OF
FOR YOUR NEAR AND DEAR WHO IS FAR AWAY

CHANDAMAMA

Give him the magazine in the language of his choice—
Assamese, Bengali, English, Gujarati, Hindi, Kannada, Malayalam, Marathi, Oriya, Sanskrit, Tamil or Telugu
—and let him enjoy the warmth of home away from home.

Subscription Rates (Yearly)

AUSTRALIA, JAPAN, MALAYSIA & SRI LANKA

By Sea mail Rs. **129.00** By Air mail Rs. **276.00**

FRANCE, SINGAPORE, U.K., U.S.A., WEST GERMANY & OTHER COUNTRIES

By Sea mail Rs. **135.00** By Air mail Rs. **276.00**

Send your remittance by Demand Draft or Money Order favouring 'Chandamama Publications' to:

CIRCULATION MANAGER **CHANDAMAMA PUBLICATIONS** CHANDAMAMA BUILDINGS
VADAPALANI MADRAS 600 026

CHANDAMAMA (Hindi) October 1997 Regd. No. M. 5452/97
RN 1087 / 57

कभी न हम भूलें जी... जीते जी

जीने की राह यही है सही

जीवन की इन राहों में हर कदम है इम्तिहान. किन राहों को अपनाएंगे, किन से मुंह मोड़ेंगे, यही हमारी पहचान. बिना चाह के, बिना आस के, किसी का हाथ बंटाना, यूं ही राह चलते, किसी के काम आना. इसी को कहते सच्चाई से जीना. कभी न हम भूलें जी . . . जीते-जी, जीने की राह यही है सही.

बरसों से भारत के सबसे ज्यादा चाहे जानेवाले बिस्किट.

• स्वादभरे, सच्ची शक्तिभरे •

everest/95/PPL/108 R hn